भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 09 | उदयपुर रविवार 15 मई 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

हथेली पर श्वेत कमल-सा खिलता उदयपुर

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

उगते सूरज ने जिस धरती के माथे को चूमा, वीरों के लहू ने जिस भूमि को सींचा, प्रताप-सा तेज लिए जिसने आजादी की लौ को रोशन किया, पन्नाधाय की ममता, जिसके आंचल में दूध पीते शिशु ने करवटली, हवा के ताजे झोंके जैसा शहर, जब जितनी बार देखो, हरबार नएपन के अहसास से भरा हुआ हथेली पर उगते चांद सा जिंदादिल लोगों का शहर उदयपुर।

पीछोला झील किनारे ऊंची टेकरी पर बने राजमहल और उससे सटी बस्ती 'नावघाट' पर रहने वाली लच्छु, रतनप्रभा, जानकी, नारायणी बाइयों के स्वरों को संधान देती लता मंगेशकर का गाया लोकगीत आज भी यहां के कण-कण, जर्रे-जर्रे और लहर-नहर में गूंजित है -

राणाजी म्हैं तो कईयन मांगूं
सोनो नी मांगूं / रूपो नी मांगूं।
नी मांगूं नवसरहार
पीछोला रो पाणी मांगूं
उदियापुर रो वास।।

अर्थात् राणाजी! मुझे आपसे किसी की चाहना नहीं है। न सोना, न चांदी, न नवसर हार चाहिए। चाहिए तो पीने के लिए केवल पीछोला का पानी और रहने के लिए उदयपुर में वास-निवास। लता मंगेशकर से वर्षों पूर्व इसे नावघाट पर रहने वाली बाइयों ने गाकर राजदरबार को कोकिल कण्ठी स्वर दिया था। महाराणा भूपालसिंह ने तो अपने राजघराने की श्रेष्ठ गायिकाओं को बम्बई भेजकर ग्रामोफोन रिकॉर्डें भी तैयार करवाई थीं।

इन्हीं महाराणा की धर्मप्रिय रानी बड़थकुंवरी ने लोकगीतों की अति लोकप्रिय रागों में माताजी और श्रीहजूर की भावनाएं लिखी थीं जिसका प्रकाशन हुआ। मैंने इन्हीं महारानीजी की शिकारकथा पर सबसे पहले धर्मयुग में लिखा जिसकी बड़ी सोहरत हुई। इन्हीं महाराणा के वक्त तुलसीनाथ धायभाई जैसे शिकारी हुए जिन्होंने तीन-तीन महाराणाओं को शिकारें करवाईं।

एक भेंट के दौरान उन्होंने मुझे बताया कि अपने जीवनकाल में उन्होंने 50 तो खुद के तथा 40 दूसरों के जख्मी शेर मारे। 150 अधवेसरों को धर दबाया। 500 सूअर धरे जिसमें 50 के करीब घुड़दौड़ में। ऐसे ही 12 रींछ, 125 मगर, 50 हरियम, 20-20 के करीब चोखारे-दोखारे और इसी प्रकार हिरन, नीलगायें, चारसींगे, चीतल, साम्भर, जरख, जलमानस, जंगली मुर्गे, खरगोश, सेली, भेड़िये कुरुकुत्त तथा मछलियों का शिकार किया।

महाराणाओं के साथ शिकार करने-कराने के प्रसंग में धायभाई तुलसीनाथ ने बताया कि शिकार करने का एक अलग ही संसार है। उदयपुर में शिकार के जैसे स्थल हैं वैसे विश्व में शायद ही कहीं मिलेंगे। मैंने इस बाबत धर्मयुग में लिखा -

मोटे-मोटे मगरे, मगरों से मिले छोटे-छोटे मगरे। मगरे के ऊपर मथारे, मथारों पर ऊंची-नीची घाटियां, टेढ़ेमेढ़े रास्ते और घुप्प-घुप्प गेलियां, फिर खादरे खूब बड़े, खूब घने, गहरी छाया और घनी झाड़ी, खादरों से लगे फिर मथारे। मगरों के आजूबाजू की फरड़ और इधर-उधर के ऊंचे-ऊंचे स्थान जिनके कई नाम। इन मगरों में बने शिकारगाह। शिकार के हाके के लिए जगह-जगह लुके छिपे हाकेवाले टोंकिये, नौकरिये। हाथी, घोड़े, ऊंट इन सबके सवार और अफसर। शिकारी कुत्ते।

कभी शान्त, स्तब्ध वातावरण सारे वनखण्ड का तो कभी हाके होहल्ले। हाकों पर हाके। पटाखों की आवाज, हाथियों की चिंघाड़, घोड़ों की हिनहिन, लट्ठ, बरछी, तलवार और बन्दूकधारियों की रेलपेल और इन सबके बीच सारे मगरों को गूंजाता, घाटियों की गहरी ऊंजगूंज देता, कभी हूंकार भरने वाला तो कभी गरजकर दहाड़ें मारने वाला सैंकड़ों के बीच अकेला जंगल का राजा शेर।

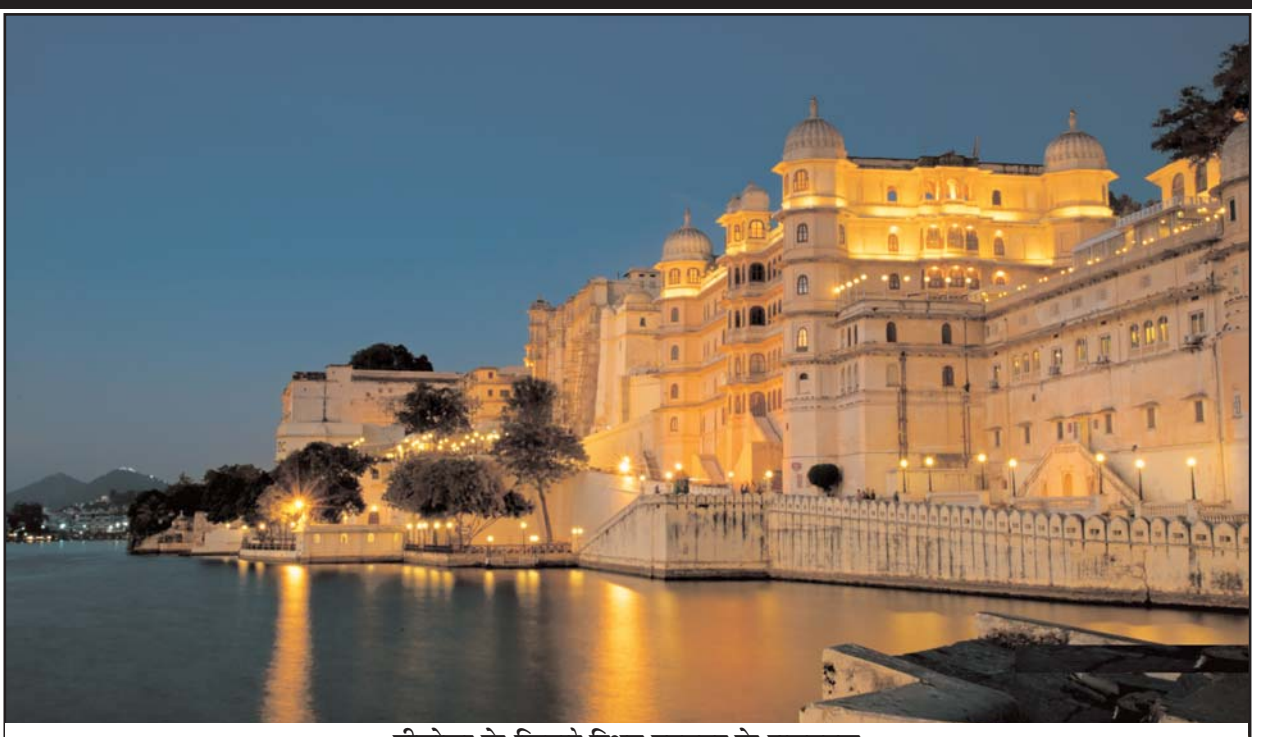

पीछोला के किनारे स्थित उदयपुर के राजमहल

बलिष्ठ बांका और चकमेबाज ऐसा कि कभी गहरी दरार में छिप जाय तो कभी गुफा में गहम जाय। कभी ऊंडे गहरे पानी में दुबक जाय तो कभी ऐसा अदृश्य हो जाय कि आंखें फटी की फटी रह जाएं। पेट और पीठ की गोली आर-पार निकल जाय चाहे पसलियां बाहर आ लटकें।

अगला हाथ टूट जाय, चाहे जबड़े जमीन छूने लगें मगर यह आदमखोर वृक्ष पर चढ़कर भी उन आदमियों की अर्थी बनाने में नहीं चूकेगा जिन्होंने उसके शाही साम्राज्य में आकर उसके ऐश्वर्य को चोट, खोट और चुनौती दी।

यही नहीं, धायभाईजी ने शिकार के लिए सुरक्षित रहे स्थलों के विविध नामों-ढाणों के जिक्र में जैसे एक लम्बी हकीकत की बही ही बांच दी। इस प्रकार-

शिकारों के लिए जगह-जगह के मगरे-मगरी सुरक्षित रहते। उदयपुर के कई मगरे तो प्रसिद्ध ही थे। जयसमुद्र, चित्तौड़, कुंभलगढ़, माण्डलगढ़ के मगरे भी बड़े नामी थे। सब मगरों के अलग-अलग नाम और खासियत। मेवाड़ी संस्कृति के प्रतीक इन मगरों के कितने-कितने सुन्दर नाम और इनकी ओलखाण है। सुनिये-

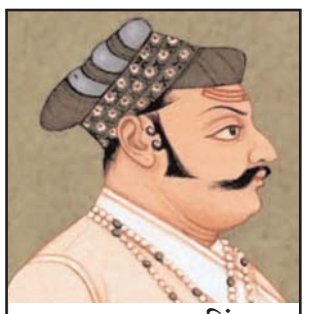

महाराणा उदयसिंह

उदयपुर का बांकी मगरा, कलेरनामी मगरा, नाहर मगरा, मकेरड़ा मगरा, राखिया मगरा, होड़े मगरा, हिंगलाजिया मगरा, कमलोदे मगरा, भवाणी मगरा, सीकलिया मगरा, बागदड़े का मगरा, कन्नोड़ा की मगरी, मइया नामी मगरा, तिखिया मगरा, कोल्यारी मगरा, धूणीवाला मगरा, बाणानामी मगरा। जयसमुद्र का सेखड़ी मगरा, खानाडेयानामी मगरा, केर मगरी, चाटपुरिया मगरा, राखियानामी मगरा, बामनिया, सलिया खेड़ा व लोड़िया मगरा।

राजनगर (राजसमंद) का बीजरणा का बीड़ा तथा गढ़वाला। करेड़ा का भरकमाता का मगरा। ईसवाल का चोरमार पूंछड़ी मगरा। उदयसागर का कमलोदनामी मगरा व सन्तु। यही नहीं, देबारी का घण्टीवाला मगरा तथा कुंभलगढ़ का बनोकड़ा मगरा बड़े नामी हैं जिनमें शिकारगाह बने हुए हैं। मरदाना शिकारगाह के अलावा कहीं-कहीं जनानामूल भी बने हुए हैं जहां महारानीजी बैठकर शिकार खेलती थीं। कौन से मगरे में कहां शिकार है? कौन शेर कहां आतंक मचा रहा है? शिकार की तैयारियां कैसी चल रही हैं? शिकार की व्यवस्था के लिए किसको कहां से बुलाना, भेजना है?

शिकार सम्बन्धी ऐसे पचासों संकेत-सन्देश होते जो दूर-दूर तक भेजने पड़ते और इन सारी जगहों की जानकारी रखनी पड़ती। इसके लिए विशेष प्रकार के गोल कांच पर सूर्य की किरणों से चलका देकर सन्देश आदान-प्रदान किये जाते।

ये कांच हेलुग्राफ कहलाते जिनसे बीस-पच्चीस किलोमीटर दूर तक के समाचार लिये दिये जाते। हेलुग्राफ के अतिरिक्त झंडियों के संकेत से भी यह कार्य होता। रात्रि को विशेष प्रकार की रोशनी इस कार्य को पूरा करती।

उदयपुर की बसावट का पूर्व नाम देवपुर रहा। इसके लिए कहा जाता है कि सिसोदिया वंश के बालक उदयसिंह को कुंभलगढ़ के किलेदार आशाशाह देवपुरा द्वारा गुप्त पनाह देकर पालने-पोसने के कारण उदयसिंह महाराणा बने।

तब उस वंश की स्वामीभक्ति को शीर्षमान देते हुए हरे-भरे पहाड़ों के बीच जिस शहर की नींव डाली उसका नाम देवपुर रखा, किन्तु सामन्तों के दबावपूर्ण आग्रह को देखते यह अलबेला शहर कई उतार-चढ़ाव देखने के बाद उदयपुर के नाम से विक्रमी संवत् 1610 अर्थात् 15 अप्रेल 1553 की अक्षय तृतीया, वैशाख शुक्ल तीज को अस्तित्व में आया।

बात हल्दीघाटी युद्ध की है। इधर हल्दीघाटी का रण मचा हुआ था और उधर अकबर की एक टुकड़ी को कुंभलगढ़ भेज दिया गया। उस समय वहां पर किलेदार आशाशाह देवपुरा था जो बहुत बूढ़ा हो चुका था। उसका भतीजा डूंगरसिंह था।

दोनों बड़े बहादुर, जोशीले और अपने कर्तव्य के प्रति मर मिटने वाले थे। किले का मुख्य दरवाजा लोहे के तीखे भालों से युक्त, बड़ी मजबूती लिए था। शाही हाथी बार-बार उनसे टकराकर लहूलुहान हो गया था। अकबर के सैनिकों के आगे अपने दमखम को सवाया मानते हुए दोनों वीर अपने हाथों में लपलपाती तलवारें लिए दरवाजे के ऊपर से उतरकर नीचे आए और जोरदार भिड़न्त की।

- शेष पृष्ठ पांच पर

पोथीखाना

कम्युनिकेशन टुडे का डिजिटल मीडिया अंक

जयपुर से प्रकाशित मिडिया प्रोफेशनल्स का द्विभाषी अंग्रेजी-हिन्दी कम्युनिकेशन टुडे का जनवरी-जून 2022 का 496 पृष्ठीय संयुक्तांक एक पूरे ग्रन्थ का आस्वाद कराता 'डिजिटल मिडिया : चेलेंजेज एण्ड अपोर्चुनिटी' अंक अपने क्षेत्र का अकेला एकमात्र त्रैमासिक पत्र है जो किसी संस्था-संगठन का नहीं होकर अकेले एक व्यक्ति की साधना-सेवा का करिश्मा ही है।

वरिष्ठ पत्रकार राजेन्द्र बोड़ा ने इस पर बड़ी ही पैनी और सटीक टिप्पणी दी है। वे लिखते हैं- 'आज एक ऐतिहासिक इवेन्ट में वेबिनार के जरिये जुड़ने का मौका मिला। भारतीय समाचार दिवस पर जनसंचार शिक्षण को समर्पित प्रतिष्ठित जर्नल कम्युनिकेशन टुडे के नियमित प्रकाशन के 25 वर्ष पूरे होने का यह उत्सव था। राजस्थान में मिडिया शिक्षण के पुरोधा डॉ. संजीव भानावत को धन्यवाद दिया जाय जिन्होंने बिना किसी संस्थानिक सहयोग के न केवल इस जर्नल का अनवरत प्रकाशन जारी रखा बल्कि शोधार्थियों के लिए अपनी गुणवत्ता का स्तर ऊंचा बनाये रखा।' - पृ. 3

प्रस्तुत अंक में कुल 52 लेख हैं जो देश-विदेश में डिजिटल मिडिया से सम्बन्धित जो क्रान्तधर्मी रोशनी फैली उसका विभिन्न विद्वान लेखकों ने कई दृष्टियों से सूक्ष्म पैना और गहन विश्लेषण दिया है। अंग्रेजी में लिखने वाले 42 आलेख हैं जबकि हिन्दी के कुल 10 ही आलेख हैं पर उनमें विषय का सांगोपांग दृष्टि से जो पक्ष रखा है वह बेहतर से बेहतरीन बन पड़ा है। चन्द उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

(क) आभासी से तात्पर्य है- आभास देने वाला। जो है नहीं मगर होने का भ्रम देता है। अन्तर्जाल की यह दुनिया वास्तविकता का आभास देती है मगर वास्तविकता में वह है भी नहीं। फेसबुब, इंस्टग्राम, यूट्यूब आदि एक तरह से अन्तर्जाल का मायाजाल है। - अन्तर्जाल का मायाजाल रचता है आभासी दुनिया, राजेन्द्र बोड़ा, पृ. 427-28

(ख) यह डाटा का ही कमाल है गूगल और फेसबुक जैसी अपेक्षाकृत नई कम्पनियां दुनिया की बड़ी और लाभकारी कम्पनियां बन गई हैं। डाटा ही वह ईंधन है जो अनगिनत कम्पनियों को चलाये रखने के लिए जिम्मेदार है। वह चाहे तमाम तरह के एम्स हों या विभिन्न सोशल नेटवर्किंग साइट्स, सभी उपभोक्ताओं के लिए मुफ्त हैं। - इंसान से आंकड़ा बनाने का सफर, प्रो. (डॉ.) मुकुल श्रीवास्तव, पृ. 432

(ग) मनुष्य कभी कोई भी बात शब्दों में नहीं सोच सकता। उसका मस्तिष्क शब्दों के मुकाबले चित्रों को ज्यादा बेहतर तरीके से समझता है तभी बच्चों को 'अ' अनार और 'ए' फॉर 'एप्पल' पढ़ाया जाता है जो सीधे उनके दिमाग में उतर जाता है। शब्द भले ही कितने ही असरकारी हों लेकिन यदि उन्हें सम्प्रेषित होना है, उसे समझना है तो चित्र ही विकल्प है।

देहभाषा और चेहरे के मनोभाव एक तरह से चित्रात्मक अभिव्यक्ति ही है। संवाद का अंक गणित इस बात की पुष्टि करता है। किसी भी तरह के मौखिक संवाद में महज 7 फीसदी असर शब्दों का होता है जबकि 38 फीसदी आपकी आवाज की टोन और उसके उतार-चढ़ाव का और सबसे ज्यादा 55 फीसदी आपकी देहभाषा का होता है जिसमें आंख, हाथों के इशारे, चेहरे की मुद्राएं शामिल होती हैं।

हम अपने प्रतीकों, मनोभावों और संकेतों से संप्रेषित कर पाने में कमजोर होते हैं। उसकी वजह यही है कि हमने शारीरिक हावभाव पर न उतना ज्यादा ध्यान दिया, न ही उस पर व्यवस्थित ढंग से अध्ययन और शोध हुआ।

पिछले एक दशक में सोशल मीडिया के माध्यम से एक नई तरह की भाषा का जनम हो चुका है। ट्विटर, फेसबुक, व्हाट्सअप की एक अलग भाषा विकसित हो चुकी है। नई पीढ़ी ने हिन्दी का तो स्वरूप बदला ही है अंग्रेजी भी 'नट एण्ड सेल' बहुत शार्टकट रूप में है।

-इमोजी : अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम, डॉ. आशीष द्विवेदी, पृ. 441-42

- म. भा

विजयशंकर मिश्र 'भास्कर' की दो पोथियां

'जोहारी तोहैं बजरंगी' को कवि ने अवधी भाषा में लिखा है। कवि के निवास स्थान के निकट ही एक ऐतिहासिक तीर्थस्थल है जहां लक्ष्मण की शक्तिबाण द्वारा मूर्छा निवारण हेतु हनुमानजी के धौलागिरि पर्वत की ओर गमन के समय कालनेमि से भेंट हुई थी। कालनेमि रावण द्वारा प्रेषित एक राक्षस था।

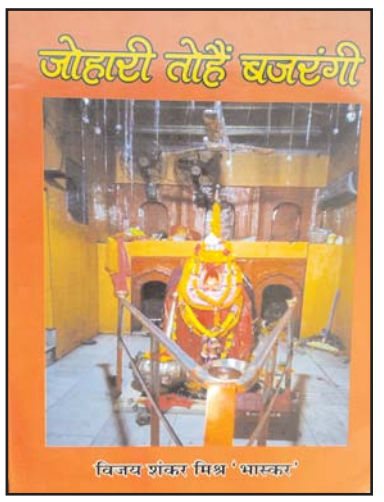

रावण ने उसे हनुमानजी के मार्ग में बाधा डालने के उद्देश्य से भेजा था। मकरी के रहस्योद्घाटन के उपरान्त इसी स्थल पर हनुमानजी ने उसका वध कर दिया था। प्राचीन काल से ही यहां मंगलवार और शनिवार को श्री हनुमानजी के दर्शनार्थ मेला लगता आ रहा है।

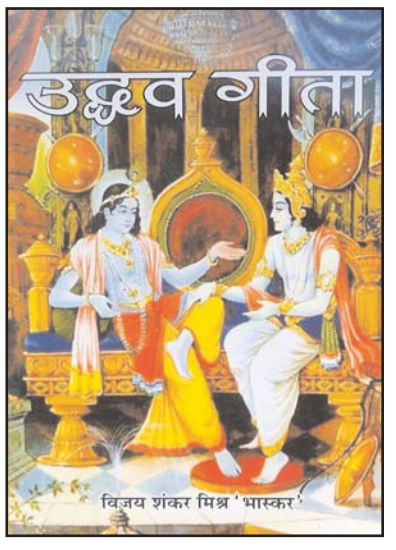

काव्य के प्रमुख पात्र के रूप में दादी समाज की सनातन व्यवस्था की पोषक है। यह सत्य है कि दादी पूर्व काल में पूर्णरूपेण स्वस्थ रहा करती थी। पूरे परिवार एवं गांव को मार्गदर्शन देती रहती थीं और सबकी श्रद्धा भाजन हुआ करती थीं।

प्रस्तुत काव्य-पोथी में कवि ने परम्परानुसार सरस्वती वन्दना करते हुए काव्य का शुभारम्भ किया है। मंगलाचरण के पश्चात कपीश हनुमानजी का स्तवन करते हुए कवि श्री हनुमानजी में पूर्ण आस्था व्यक्त करता हुआ कहता है-

दादी गेहूं धोने, सुखवाने, पसवाने और बाल गोपाल के साथ बाबा बजरंगबली को फूल-बतासा चढ़ाने का कार्यक्रम बना रही है। दादी की कुशल-क्षमता का परिणाम यह हुआ कि कराही की टिकरी चढ़ाई गई। बन्दरों को गुरधनिया तथा भीगा चना दिया गया। आमन्त्रित लोगों को भोजन करा कर दक्षिणा दी गई। कथाश्रवण के उपरान्त परिवार और पड़ौसियों के साथ दादी श्री हनुमानजी का दर्शन कर रही है। यथा-

कथा सुनि लौटि के लेइ टिकरी कुछ माला औ फूल बतासा मिठाई।
दादी चलीं संग नाति औ नातिन और संघातिन झुंड बनाई।
घंटा बजाइ पतोहन के संग दर्शन पाई के नैन अघाई।
भास्कर लाली लगी सबके पैकरमा करैं बाबा क मनाई।।

यहां लेखक विजयशंकर मिश्र 'भास्कर' का यह कथन द्रष्टव्य है-

दादी मध्यम वर्ग की पारिवारिक मुखिया का प्रतिनिधित्व करती हुई एक सजग भारतीय नागरिक की भूमिका निभाती है। वह ऊर्जा, आस्था और ममता की प्रतिमूर्ति है। अपने हृदय की वात्सल्य धारा को पूरे परिवार पर उंड़ेलती हुई दादी अपने भक्तिभाव को क्षेत्र देवता को समर्पित कर परिवार, समाज और देश के लिए मंगल की याचना करती है।

अवधी प्रकाशन, रानेपुर, पलियागोलपुर, सुलतानपुर (उ. प्र.) से प्रकाशित 52 पृष्ठीय यह काव्य-पुस्तिका 100 रूपये मूल्य की है।

दूसरी पुस्तक 'उद्धव गीता' में श्री कृष्ण और उद्धव के बीच हुए वार्तालाप को लेखक विजयशंकर मिश्र 'भास्कर' ने सरल और चुटीले ढंग से रखते हुए गीता की निम्न वाणी को जीने और आत्मसात करने की मान्यता को दुहराया है, जिसमें कहा गया है-

ईश्वर ही सबका शासक, नियामक, पालक एवं संचालक है। वह शरीर को मैं और मेरा मानकर चलने वालों को अपनी मायाशक्ति से घुमाता है, ठीक उसी प्रकार जैसे रेलगाड़ी में बैठा हुआ मनुष्य रेलगाड़ी के अनुसार ही गमन करता है। पुस्तक के अन्त में कवि का यह कथन द्रष्टव्य है-

पत्ता भी नहीं हिला करता, ईश्वर की इच्छा बिना कभी।
अनुभव होता है वह साक्षी, प्रभु देख रहा है कृत्य सभी।।
यह सम्यक् गीता दर्शन है, सर्वत्र चेतना ईश्वर की।
उसकी चेतनता में मिलना ही परम प्राप्ति परमेश्वर की।।
सारथी बने थे नन्दलाल या अर्जुन के पथदर्शक थे।
वह मोहग्रस्त था, प्रभु गुरु थे, वह ही तो उसके रक्षक थे।।
इस उद्धव गीता को गाकर, पढ़कर विश्वासी बन देखो।
हो जहां वहीं बैठे-बैठे, वह साक्षी उरवासी देखो।।

तीस पृष्ठीय यह पुस्तिका 50 रूपये मूल्य की है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

माँ आंसू जब-जब झरे, धरा करे उतपात

- माणक तुलसीराम गौड़ -

माँ निर्मात्री सृष्टि की, माँ ही पालनहार।
शक्ति विराजे मात में, माँ जीवन आधार।।
माँ का पूजन कीजिए, वंदन आठों याम।
ठौला क्यों भटकत फिरे, माँ है चारों धाम।।
माँ शाला संस्कार की, माँ अनुभव की खान।
माँ आशीष जिसे मिले, तब बदले दिनमान।।
माँ मंदिर की आरती, माँ पूजा का फूल।
माँ मूरत भगवान की, कभी न उसको भूल।।
माँ गीले सोती रहे, सूखे सोता लाल।
पूरे जग में देख लो, ऐसी कहाँ मिसाल।।
ऐसे कृत्य न कीजिए, माँ को हो आघात।
माँ आँसू जब जब झरे, धरा करे उतपात।।
सकल पदारथ पाइए, जो माँ चरण अधीन।
माँ मेहर जिन पर रहे, वह काहे का दीन।।
कौन जतन जग में करे, कौन करेगा प्यार।
इसीलिए तो ईश ने, माँ भेजी संसार।।
माँ जीवन की ढाल है, माँ पेड़ों की छाँव।
धन्य वही संतान जो, पूजे माँ के पाँव।।
जिस भी घर परिवार में, माँ आँसू ढलकाय।
सब ग्रह ऐसे कुपित हों, यह धरती हिल जाय।।
खुश रखना हो मात को, है कितना आसान।
धन दौलत चाहे नहीं, चाहे केवल मान।।
इस सारे संसार में, एक मूढ़ इंसान।
माता तो घर में बसे, वह ढूंढ़े भगवान।।
चींटी से श्रम सीखिए, कोए से तरकीब।
मकड़ी से कारीगरी, माता से तहजीब।।
लड्डू बर्फी पूडियाँ, खायी भर-भर पेट।
माँ की सूखी रोटियाँ, आनन्द देय यथेष्ट।।
'माणक' माँ को पूजता, वंदन आठों याम।
करुणा बरसे मात की, बनते बिगड़े काम।।

मेघवाल लिखित पुस्तकें वितरित

उदयपुर (ह. सं.)। तीन मई को भारतीय सांस्कृतिक निधि (इंटैक) उदयपुर चैप्टर के 45 सदस्यों को इंटैक के आजीवन सदस्य पन्नालाल मेघवाल द्वारा लिखित 'राजस्थान के लोकगीत' एवं 'राजस्थान के दुर्ग' पुस्तकें वितरित की गईं। 'राजस्थान के लोकगीत' पुस्तक में देवी-देवता, जच्चा-बच्चा, शादी-ब्याह, तीज-त्यौहार आदि के 270 लोकगीत सम्मिलित हैं जबकि 'राजस्थान के दुर्ग' में राजस्थान के 39 दुर्गों का शोधपूर्ण प्रामाणिक रोचक वृतांत है। इनमें कुंभलगढ़, चित्तौड़गढ़, जैसलमेर, रणथंभौर, गागरोन एवं आंबेर (आमेर) भी सम्मिलित हैं जो विरासत स्थल घोषित हैं। इस मौके पर चैप्टर परिवार के डॉ. बीपी भटनागर, ललित पांडेय, गौरव सिंघवी, महेश शर्मा, सतीशकुमार श्रीमाली, एसएन डोडिया, मनीष गोयल, रानू सिंघवी, महीप भटनागर, डॉ. एसके वशिष्ठ एवं विनोद अग्रवाल उपस्थित थे।

स्मृतियों के शिखर (143) : डॉ. महेन्द्र भानावत

सौ टका दोस्ती वाले इक़बाल 'सागर' जैसे दोस्त

सच डॉ. इक़बाल 'सागर' जैसे दोस्त अधिक नहीं होते। दो-चार भी नहीं होते। हैं तो वे एक ही जो जब भी मिलते हैं खुशमिजाज बना देते हैं। उनकी जबान पर गज़ल का जल-जलवा तो है ही पर उसका 'ग' गहन और गम्भीर तथा 'जल' समुद्र का प्रतीक होकर उन्हें इक़बाल और सागर का बिम्ब बनाते एक समग्र इक़बाल 'सागर' की परिणति देता है।

दोस्ती कई तरह की होती है। दोस्ती लन्दन वाली भी हमने देखी है तो कृष्ण-सुदामा की दोस्ती भी सुनी है। दोस्ती लन्दन वाली के बीच शर्त-समझौते का अन्तरवासा था, टाइम पीरियड था जो खत्म हो गया। कृष्ण-सुदामा में लोड़े-बड़े का गेप था जिसका निर्वाह नदी के दो किनारों की तरह हुआ। गोठीड़ों की दोस्ती भी होती है जिसमें दोनों दोस्त साथ-साथ रहकर अभिन्न घनिष्ट बने रहते हैं। सहपाठी सहकर्मी वाली दोस्ती भी अपने रंग-ढंग की चर्चित रही है।

इन सबके बीच डॉ. इक़बाल 'सागर' और मेरी दोस्ती 'न उधो का लेना न माधो का देना' ही कही जानी ठीक रहेगी। उन्होंने पांच वर्ष गुलामी के अस्त होते सूर्य को देखा जबकि मैंने दस वर्ष उस काल को भोगा और स्कूल की प्रभातफेरी में 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' तथा 'उठ जाग मुसाफिर भोर भई' जैसे गीत गाते पुलिस के डण्डे को आक्रामक होते भोगा।

डॉ. महेंद्र भानावत के साथ डॉ. इक़बाल 'सागर'

अपने गांव कानोड़ में सन् 1952 तक मैंने आजादी का लालटेन जलाते, मिडिल बोर्ड का आठवां घर (कक्षा) पास करते आगे की सुध ली। सन् 1958 में उदयपुर आया तो साहित्यिक हलचल वाले जो साथी सम्पर्क में आये उनमें इक़बाल 'सागर' से शुरू हुई दोस्ती अब तक वैसी जैसी 'राई घटी न तिल बढ़ी' बनी हुई है।

कहते हैं, दोस्त बनाना सरल है पर निभाना मुश्किल है। हमारी दोस्ती कभी अपेक्षा और उपेक्षा वाली नहीं रही सो निभती-निभाती नींगोट बनती रही। कभी कच्चापन नहीं आया सो कभी कच्चे बेर, कच्ची केरी और कच्ची इमली की तरह कसैली, तुरी और खट्टी खटास वाली नहीं बनी। हमारी दोस्ती की पतंग न अधिक ऊंची उड़ान भरने को रही और न गुलांछी खाकर नीचे गिरी। डोर भी न कभी उधड़ी, न टूटी, उलझी और आउटडोर ही हुई।

हम पढ़ते रहे, बढ़ते रहे। मिलते रहे, मिल्लत करते रहे। उन्होंने उर्दू और फिर समाजशास्त्र में एम. ए. कर पीएच.डी. ली। मैंने हिन्दी में एम. ए. कर आदिवासी भीलीजीवन में प्रचलित गवरी नृत्यानुष्ठान को अपना शोध-विषय बनाया। दोनों के रास्ते जुदा-जुदा। हम कभी हमउम्र, हमशक्ल, हमअक्ल नहीं रहे।

यह सुखद पक्ष ही रहा कि हमें हमारी रूचि की, काम करने की जगह मिल गई या कहिये हम ही उसमें रूचि सम्पन्न हो गये। वे हिन्दुस्तान जिंक में साहित्य संस्कृति तथा खेल से जुड़े मामलात देखते। मैं भारतीय लोककला मण्डल में लोककला-साहित्य-संस्कृति के अटेरण-पटेरण में लग गया।

जिंक में राजभाषा हिन्दी का पूरा अलग से प्रकोष्ठ था जिसको मेरे मित्र डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी सम्भालते। इक़बाल 'सागर' और छंगाणी दोनों एक-एक ग्यारह मिल वहां सोने में सुहागा लगाते। जिंक के सभी केन्द्रों में साहित्य से जुड़ी विविध गतिविधियों में जब-जब भी मैं भाग लेता, उनसे दिल्लगी से मिलना हो जाता। कलामण्डल में भी जब-जब मैं कोई संगोष्ठी, सभा, समारोह, मेला, प्रदर्शन आयोजित करता, इन सबकी भागीदारी से हमारी भी खुशहाली बनी रहती।

हमारी दोस्ती में दोनों की साहित्यिक मिजाजी का अहम रोल रहा। सागर प्रारम्भ से ही शेरो शायरी करने लगे। साहित्य-संस्कृति की इसी रूचि के कारण वे विभन्न संस्थाओं से सक्रियता से जुड़े। मैंने सम्प्रति संस्थान प्रारम्भ किया तो उन्होंने तामीर सोसायटी की स्थापना की। हिन्दुस्तान जिंक में भी उन्होंने अपनी कुशल प्रबन्धबोधिनी क्षमता, दक्षता तथा कर्मठ कौशल का उच्चस्तरीय जो बेहतरीन परिचय दिया उसके कारण वे ही एकमात्र ऐसे अधिकारी रहे जिन्हें स्वर्णपदक प्रदान किया गया।

जिंक के माध्यम से उन्होंने अनेक मुशायरे तथा कविसम्मेलन आयोजित किये। मुशायरों में जहां ख्यातिलब्ध सरदार अली जाफरी, जांनिसार अख्तर, कैफी आजमी, मुनव्वर राणा, बेकल उत्साही, वसीम बरैल्वी, गुलजार देहलवी जैसे चोटी के शायरों को आमंत्रित किया वहीं साहित्यकारों-कवियों में अमृता प्रीतम, सेठ गोविंददास, कालेलकर, काका, माचवे, गोपालप्रसाद व्यास, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' नीरज, बालकवि बैरागी, मुकुल जैसे नामचीन व्यक्तियों का सान्निध्य लिया। इनमें से मुनव्वर राणा, अमृता प्रीतम, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' से तो मेरा भी नजदीकी परिचय कराया। अश्कजी का तो कला मण्डल में एक यादगार सम्मान समारोह भी रखा। मुकुलजी, बैरागीजी, नीरजजी, सेठजी तो कला मण्डल में चाय पर बुलाये गये। काका कालेलकर, सेठ गोविन्ददास, काका हाथरसी, गोपालप्रसाद व्यास, प्रभाकर माचवे आदि से तो मैंने विशेष भेंट कर साक्षात्कार भी लिए।

ऐसे साहित्यिकों, कलाकारों, विद्वान मनीषियों से मिलना-जुलना इकबालजी का जमीनी शौक रहा। यह उनकी खासियत है कि वे ऐसे कामों के लिए बड़ी दिलचस्पी से सहयोग के लिए सदैव तैयार रहते हैं। मेरे जैसे मित्रों के लिए तो वे उधारे जाते हैं। ऐसे अनेक अवसर आये जब मुझे उन्होंने खुलकर सहयोग किया।

मुझे लगता है, मित्रों के किसी भी नेक काम के लिए वे हर समय प्राथमिकता से तैयार रहते हैं। वे जब महावतवाड़ी में रहते थे तो मैंने महावतों के बहाने हाथी-पालकों का जिक्र छेड़ा तो वे मुझे तत्काल एक वयोवृद्ध उलफतअली के पास ले गये जो महाराणा के खास हाथी-चालक-पालक थे। उनसे मैंने ऐसी अद्‌भुत विचित्र जानकारियां लीं जो कहीं लिपिबद्ध, शास्त्रबद्ध और प्रचलन में नहीं थीं।

उन्होंने बताया कि हाथियों के साथ जैसा हमारा व्यवहार होगा, हाथी भी उसी लाड़-प्यार से अपना सलूक करेगा। हां, उसके साथ जरा सा दगा, दूजभांत, छल-कपट किया तो वह बर्दास्त नहीं करेगा बाकी आपके साथ जीजान लगा देगा।

उन्होंने बताया कि एकबार एक महावत ने हाथी के हिस्से का रोट बनाने के लिए सवामण आटे से कुछ आटा चुरा कर रख लिया। हाथी को इसकी सूंघ मिल गई। आटा कम होने से रोट कम बना सो वह भूखा रह गया। इसका संकेत भी उसने महावत को दे दिया पर महावत ने कोई तवज्जु नहीं की। भूख से विव्हल हाथी बिगड़ गया। मौका देख उसने महावत की एक टांग सूण्ड में ले चीर कर उसे दूर फैंक दिया।

उलफत अली के अनुसार हाथी जब मद में आता है तो उसके कान के पास से पसीने जैसा पदार्थ निकलता है। इससे महावत समझ जाता है कि हाथी को हथिनी के सहवास की जरूरत है। इस दौरान हाथी असहज हो कई तरह की हरकतें करता पाया जाता है। समय पर नहीं चेतने पर वह बेकाबू भी हो जाता है और कई तरह के अनर्थ भी कर बैठता है। यों हाथी बड़ा ही बुद्धिमान, समझदार और वफादार जीव है। उलफत अली ने हमें शहर से दूर स्थित वह बीड़ भी दिखाया जहां दरबार के हाथी रखे जाकर पालेपोसे और अनेक तरह से प्रशिक्षित किये जाते।

इसी कड़ी में तुलसीनाथ धायबाई से भेंट कराई जिन्होंने जंगली जानवरों की अगणित शिकारों के साथ तीन-तीन महाराणाओं से शाही शिकारें कराईं और स्वयं ने 500 के करीब शेरों की शिकारें कीं।

ऐसे ही महाराणा भूपालसिंहजी की धर्मनिष्ठ रानी बड़थकुंवरीजी की जरी-कलाबूती की शाही पोशाकें तैयार करने वाले कलाकारों से भेंट कराई। महारानीजी जानीमानी शिकारी भी थी फलत: उनकी शिकारी-कथा पर लिखने के लिए डॉ. सागर ने रानी साहिबा की प्रमुख सेविका सीतादेवी से सर्वऋतुविलास के रनिवास में भेंट कराई। उन्होंने हमें ऐसी शाही साड़ियां दिखाईं जिन पर राजदरबार के, शिकार के, शिकारस्थल ओदियों के स्वर्ण-रजत-हीरे जवाहरात जड़े दृश्य थे।

एकबार मुझे डॉ. इक़बाल सागरजी ने बोहरवाड़ी स्थित महीन किन्तु कीमती साड़ियों पर जरी गोटे का जड़ाव करने वाले उन बोहरा बन्धुओं से भेंट कराई जो महारानीजी की हीरे जवाहरात तथा माणक मोतियों की बारीक जड़ाव की साड़ियों के काम में व्यस्त थे। उन्होंने बताया कि एक-एक साड़ी को तैयार करने में महीनों लग जाते हैं। उन्होंने हमें वे साड़ियां भी दिखाईं।

उनमें शिकार के विविध दृश्य, शिकारगाह ओदी, भयावह जंगल में जानवर लुकते, भागते, शिकारियों से बचते, शिकारियों द्वारा शिकार पर निशाना मारते, रानी साहिबा द्वारा असली सुनहरी शेर का शिकार, गणगौर की शाही सवारी जैसे बड़े ही मनभावन, आकर्षक तथा अचंभित करने वाले दृश्य थे। मेरे तो ये सारे परिदृश्य पहलीबार देखने में आये। इकबालजी ने उनकी इजाजत से कुछ चित्र भी लिये। मैंने उनके आधार पर धर्मयुग, गृहशोभा तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में सचित्र आलेख लिखे जो बड़ी खूबसूरती के साथ प्रकाशित हुए।

इक़बाल 'सागर' बड़े करीने से अच्छे खाने-पीने-रहने के तो शौकीन हैं ही पर शौकीन मिजाजी भी कम नहीं हैं। कभी-कभी इत्र का भी शौक फरमाते हैं। कई इत्रों के नाम और उनकी गंध-सुगंध का बखान उनसे सुनिये। एकाधबार वे मुझे भी इत्र वाले वोराजी के पास ले गये और इत्र की शीशी नजर की पर मेरा यह शौक बिलकुल नहीं रहा।

हां, इन सबमें भी सर्वाधिक शौक इकबालजी को फोटोग्राफी का रहा। वे हर समय अपने पास केमरा रखते। मेरे साथ की सारी फोटोग्राफी उन्हीं द्वारा की गई। उन्हीं के कारण मेरे सारे लेख सचित्र शानदार रूप में छपे। अब तो जब पीछे मुड़कर देखता हूं, न वे कलाकार रहे न वे शिल्पी और न वह समय, जमाना, लोग, जानकार और सहज मन के दिलदार ही।

सच है डॉ. इक़बाल 'सागर' जैसे दोस्त अधिक नहीं होते। दो-चार भी नहीं होते। हैं तो वे एक ही जो जब भी मिलते हैं स्वयं तो खुशहाल होते ही, अन्यों को भी खुशमिजाज बना देते हैं। उनकी जबान पर खुशहाली का इजहार करने के लिए हर समय, किसी बात-कथन पर उससे फबती शेरोशायरी, इत्र-अगरबत्ती सी सुगंधी छवि उड़ेल देती है। वे किसी बात के लिए, किसी काम के लिए, विदा होने पर इन्शा अल्लाह और शुक्रिया जैसे शोभित शब्दों का सहारा लिए सकारात्मक होते मिलेंगे।

उनकी जबान पर गज़ल का जल-जलवा तो है ही पर उसका 'ग' गहन और गम्भीर तथा 'जल' समुद्र का प्रतीक होकर उन्हें इक़बाल और सागर का बिम्ब बनाते एक समग्र इक़बाल 'सागर' की परिणति देता है।

सब भूल बैठे बालकवि वैरागी को

- डॉ. पूरन सहगल -

बालकवि वैरागी ने जीवन के संघर्षों को अपना सखा बना लिया किन्तु अभावों को कभी स्वभाव नहीं बनाया। उन्हें अपने अनुकूल बनाने के लिए प्राणप्रण से ललकार लगाकर उन पर

अधिकार कर लिया। राजनीति में उस कवि ने सेवादल से लेकर मंत्री तक की ससम्मान यात्रा की। वह न कभी रूका, न थका और न कभी झुका। कांग्रेस का वह समर्पित कार्यकर्ता था। उसने कभी भी स्वयं को नेता नहीं माना और न ही कोई गुट बनाया। उसने ललकार कर कह दिया था कि, 'कविता मेरे सिर की पाग है और राजनीति मेरे पैर कर जूती।' जब चाहूँ मैं पैर की जूती को उतार सकता हूँ किन्तु सिर की पाग नहीं उतारूँगा।

अनेक लुभावन आकर्षणों के बावजूद भी उस कवि ने कभी भी अपनी मातृसंस्था कांग्रेस का पाला बदल उसके प्रति दगा नहीं किया। उन्होंने एकबार कहा था, मेरी सात माताएँ हैं- जन्ममाता, भारतमाता, जन्मभूमि (रामपुरा-मनासा सहित), गोमाता, कांग्रेसमाता, मालवीमाता, और कवितामाता। इन सप्तमातृकाओं के साथ वह कवि अंत तक पूज्य भाव लिए रहा। हिन्दी उस कवि की इष्ट थी। कई बार उन्होंने अंग्रेजी में छपे आमंत्रण अस्वीकार कर दिए। उनमें एक राष्ट्रपति कलाम साहब का आमंत्रण भी था।

मालव अंचल का वह अकेला व्यक्तित्व था जो विधानसभा, लोकसभा और राज्यसभा का सदस्य रहा। मनासा नगर परिषद, कांग्रेस संस्था ने भी उन्हें भुला दिया। उनके परिवार ने भी उन्हें भुलने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। 13 मई उनके स्मृति दिवस पर मेरा आत्मीय वन्दन।

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 15 मई 2022

सम्पादकीय

न्यायाधीश द्वारा कवितामय फैसला

राजस्थान के कोटा शहर की दिल दहला देने वाली मदरसे में उर्दू पढ़ाने वाले मौलवी द्वारा छह वर्ष की मासूम बालिका के साथ दुष्कर्म की घटना सर्वथा नींदनीय है। उर्दू शिक्षक स्वयं चार बच्चों का पिता है।

न्यायालय पोक्सो क्रम संख्या 3 ने चार माह छह दिन में ही सुनवाई पूरी कर आरोपी अब्दुल रहीम को अन्तिम स्वांस तक उम्रकैद की सजा सुनाकर त्वरित न्याय का उदाहरण पेश किया जिसकी सब ओर बड़ी सराहना की जा रही है।

इस निर्णय में विशिष्ट न्यायाधीश दीपक दुबे ने लिखा, आरोपी ने धार्मिक शिक्षक जैसे पवित्र पद पर रहते हुए 6 साल की मासूम पीड़िता को हवस का शिकार बनाकर धर्मगुरुओं के प्रति आम जनमानस की पवित्र भावनाओं को गम्भीर आहत किया है साथ ही मासूम के मन-मष्तिष्क पर कुकृत्य से ऐसी राक्षसी छाप छोड़ी है जिसे संभवत: उक्त मासूम आजीवन नहीं भुला सकेगी।

यहां रेखांकित करने की बात यह भी है कि कविमन संवेदनशील न्यायाधीश ने अपने फैसले में एक कविता लिखी जो थी-

''ओ मेरी नन्ही मासूम परी
तुम खुश हो जाओ
तुम्हें रूलाने वाले राक्षस को
हमने जिंदगी की आखिरी सांस तक
के लिए सलाखों के पीछे भेज दिया है।
अब तुम इस धरती पर निडर होकर
अपने सपनों के खुले आसमान में
पंख लगाकर उड़ सकती हो
तुम सदा हंसती रहो, चहकती रहो
बस, यही प्रयास है हमारा।।''

सच है, साहित्य समाज का दपर्ण होने के साथ-साथ उसका संरक्षक भी है। समय-समय पर समाज में जब-जब खोटाई आई और सामाजिकों पर अत्याचार, अनाचार तथा उनकी शान्तिपूर्व जीवनधर्मिता को लेकर जिस किसी ने चोट की, उसकी गम्भीर और सख्त खबर ली है। उसमें कविता अर्थात् काव्य का स्थान सर्वोपरि है।

कविता की शक्ति का सभी ने लोहा माना है। यह सच है कि कविता समग्र क्रान्ति नहीं कर सकती पर अपने क्रान्तधर्मी दायरे में समय-समय पर सदैव ही अग्रणी भूमिका निभाई है। कवि वाल्मिकि रचित रामायण से लेकर गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित मानस, हरिऔध के प्रियप्रवास, प्रसाद के कामायनी, मैथिलीशरण गुप्त के साकेत, दिनकर के उर्वशी जैसे काव्य-ग्रन्थों और कबीर, रहीम, बिहारी, मीरां की रचनाएं आज भी अपने आदर्श सामाजिक सरोकारों के निर्वाह में अग्रणी हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में जनजीवन की समस्याओं और सवालों का जिक्र करते हुए उनका स्थायी समाधान और हल भी दिया है।

'शब्द रंजन' न्याय प्रचेता दीपक दुबेजी की इस पहल को साहित्य जगत की उल्लेखनीय उपलब्धि मानते हुए आम प्रबुद्ध पाठकों की ओर से उनके इस त्वरित नैतिक, निष्पक्ष और जनचेता न्याय की भूरि-भूरि प्रशंसा करता देश में सभी न्यायालयों में ऐसी ही त्वरित न्याय प्रणाली की उम्मीद करता है।

सक्का भारत भूषण अवार्ड से सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। अंतर्राष्ट्रीय शिल्पकार इकबाल सक्का को भारत भूषण अवार्ड से सम्मानित किया गया। भोपाल मध्यप्रदेश से एंटी हरासमेंट फाउंडेशन की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. प्रतिभा वाईकर ने बताया कि भारत के विभिन्न क्षेत्रों में चयनित बाल विकास, बाल शिक्षा, महिला सुरक्षा, समाजसेवा, कला व सामाजिक कार्य करने वाले विभूतियों को हर वर्ष भारत भूषण अवार्ड से सम्मानित किया जाता है। कला के क्षेत्र में इस वर्ष उदयपुर के गिनिज बुक वर्ल्ड रिकार्ड होल्डर इकबाल सक्का को विश्व में सबसे अधिक रिकॉर्ड बनाने पर भारत भूषण अवार्ड स्वरूप प्रमाण पत्र, ट्रॉफी व गोल्ड मेडल प्रदान कर सम्मानित किया गया।

गजसिंह द्वारा डॉ. महेन्द्र भानावत को मारवाड़ रत्न का सम्मान

उदयपुर (ह. सं.)। लोककला संस्कृतिविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत को जोधपुर स्थापना दिवस 12 मई को गजसिंह द्वारा मारवाड़ रत्न कोमल कोठारी सम्मान प्रदान किया गया। राष्ट्रीय स्तर का इक्यावन हजार का यह सम्मान डॉ. भानावत को उनके द्वारा विभिन्न प्रान्तों की कलाधर्मी जातियों, लोकानुरंजनकारी प्रवृत्तियों, जनजातीय सरोकारों तथा कठपुतली, पड़, कावड़ जैसी विधाओं पर खोजपूर्ण लेखन एवं शोध के उन्नयन में दीर्घकालीन उच्चस्तरीय योगदान के उपलक्ष्य में प्रदान किया गया।

इस दिन गजसिंह का 70वां तिलकोत्सव भी था। इस संबंधित एक विशिट प्रदर्शनी 70 वर्ष पूर्व की स्मृतियां लिए अलग से आयोजित की गई जिसे देख सभी अभिभूत हुए। समारोह के दौरान गजसिंह ने पूर्व काल तथा आजादी के बाद जनसेवा के उल्लेखनीय योगदान का जिक्र करते हुए मेहरानगढ़ म्युजियम ट्रस्ट द्वारा अगले वर्ष से राजाराम मेघवाल पुरस्कार देने की भी घोषणा की।

समारोह में विशिष्ट अतिथि प्रो. संजीव मिश्रा ने कहा कि मेहरानगढ़ के सूरजवंशी सूर्यनगरी जोधपुर ने रक्त की बजाय शकुन दिया है। मुख्य अतिथि सव्यसांची मुखर्जी ने जोधपुरी भाषा, संस्कृति तथा परम्परा को देश की संस्कृति की पहचान कहा।

सम्मान समिति के सचिव इतिहासविज्ञ प्रो. जहूर खां मेहर ने कहा कि देश के लिए विभिन्न क्षेत्रों में जो महानुभाव अपने कर्त्तव्य की साधना और पुरुषार्थ में लगे हुए हैं उनकी पहचान कर उनके स्मरणीय योगदान का सम्मान अन्यों को भी प्रेरणा और शकुन देता है। धन्यवाद की रस्म ट्रस्ट द्वारा संचालित महाराजा मानसिंह पुस्तक शोधकेंद्र के सहायक निदेशक डॉ. महेन्द्रसिंह तंवर ने अदा की।

समीक्षा -

तुलसीदास सार्वकालीन प्रासंगिक कवि

हिन्दी साहित्य के इतिहास में गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, मीरांबाई जैसे काव्यकार सर्वाधिक चर्चित कवि माने गये हैं जो आज भी पढ़े-लिखों से अधिक लोकजीवन में साधारणजनों के बीच असाधारण बन गाये जा रहे हैं। सूरदास तो अंधजनों के अवलम्बन के रूप में उनके पर्याय बन आजीविका के भी साधन बने हुए हैं।

मीरांबाई भक्ति की भागीरथी के रूप में अपने गिरधर गोपाल की अनन्य उपासिका कहलाकर मुख्यत: विधवाओं, बेसहारों और परित्यक्ताओं की जीवन नैय्या खिवैया बनी हैं। मीरां के नाम-छाप के असंख्य पद लोककण्ठों पर सुर-स्वर लिए मंगल पाथेय बने हुए हैं। ऐसे पद आज भी निरन्तर लिखे और गाये जा रहे हैं। अनेक भजन मण्डलियां मीरां के 'प्रभु गिरधर नागर' का स्मरण कर अपने साथ रसिक श्रोताओं के जीवन को भी धन्य किये हैं।

इन सबमें 'राम सौं बड़ो है कौन मोसौं कौन छोटो, राम सौं खरो है कौन मोसौं खोटो' लिखने वाले गोस्वामी तुलसीदास की प्रासंगिकता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सार्वकालीन बनी हुई है। उनके लिखे सभी ग्रन्थ धार्मिक आस्था, श्रद्धा और जनजीवन के अखण्ड विश्वासी बने हुए हैं। उन्होंने अपने समय में भगवान श्रीराम के कथा-आख्यान के वाचक के रूप में भी बड़ी प्रसिद्धि ली। वर्तमान में श्री मोरारी बापू रामकथा के ऐसे अतुलनीय कथावाचक हैं जिन्होंने रामचरित के माध्यम से अनगिनत लोगों को रसायनामृत दिया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ 'भक्तिकालीन तुलसी की सार्वकालीन प्रासंगिकता' डॉ. सुशीलकुमार पांडेय 'साहित्येन्दु' के तुलसीपरक ऐसे 28 निबन्धों का संग्रह है जो उनकी सार्वकालीन प्रासंगिकता के प्रबल पुष्ट प्रमाण लिये हैं। सभी निबन्धों के शीर्षक तुलसी की काव्य-पंक्ति लिये हैं। यथा- रामकथा कै मिति जग नही, रामचरित मानस एहि नामा, नाना पुराण, मैं नाटि अपावन, धन्य भरत जीवन जग माहीं, सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे, सीता सीत निसा सम आई, करम प्रधान विस्व करि राखा।

इन शीर्षकों की विशेषता यह है कि इनके अनुरूप ही कवि ने विषय विस्तार कर अपने गहन अध्ययन, गम्भीर चिंतन तथा विश्लेषण क्षमता का बड़े ही प्रभावी ढंग से विस्तार किया है। इन शीर्षकों में निर्गुण, सगुण सम्प्रदाय, पुराणों में रामकथा, ज्ञानपंथ, राजनीति, गंगा, अहल्या, भरत, शबरी, जटायु, जामवन्त, त्रिजटा, मंदोदरी, सुन्दरकाण्ड, कागभुशुण्डि जैसे मुख्य-प्रमुख पात्रों, विशिष्ट सम्प्रदायों, पंथों तथा राजनीति को लेकर बड़े गम्भीर विस्तार से लिखते वर्तमान की प्रासंगिकता को वर्णित किया है।

यहां यह पक्ष भी रेखांकित करने योग्य है कि लेखक को बचपन से ही राम-नाम का रसायन मिला है। उनके अनुसार, 'मेरे पितामह जय-जय सियाराम बाबा के नाम से मशहूर थे। बचपन में मुझे तथा मेरी बड़ी बहिन को कंधे पर बिठाकर गांव में घुमाते और उक्त शब्दों का बार-बार उच्चारण करते रहते थे। फिर रामलीला का प्रभाव तथा कॉलेज में भक्ति साहित्य का अध्ययन और अनेक गुरुओं के सान्निध्य में रामचरित का प्रभाव पड़ा। यह भी सुसंयोग रहा कि मेरे महाकाव्य कौण्डिन्य तथा अगत्स्य पर उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान का तुलसी पुरस्कार और तुलसी तत्व चिंतन पर महावीरप्रसाद द्विवेदी सम्मान मिला। - (आमुख, रामकृपा नासहिं सब रोगा, पृ. 21)

आमुख में लेखक ने अपने मंतव्य को स्पष्ट किया है कि तुलसीदास यद्यपि भक्तिकालीन महाकवि हैं तथापि उनकी चिंतन की उच्चता तथा लोककल्याण विषयक कामना-कल्पना-अवधारणा सार्वकालीन है। उसमें कोरोना तथा अन्य सामाजिक विसंगतियों के निर्मूलन का सार्वभौम गुणसूत्र संकलित है। (पृ. 19)

कुल जमा 251 पृष्ठों की यह पुस्तक कौण्डिल्य साहित्य सेवा समिति, पटेल नगर, कादीपुर, सुलतानपुर, उत्तरप्रदेश-228145 से प्रकाशित 300 रूपये मूल्य की है।

- म. भा.

खोखावत अध्यक्ष, कच्छारा मंत्री बने

उदयपुर (ह. सं.)। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के द्विवार्षिक अधिवेशन का आयोजन तेरापंथ भवन नाइयों की तलाई में हुआ। नवकार मंत्र के जाप के साथ प्रारंभ हुई बैठक में सभा अध्यक्ष अर्जुन खोखावत ने सभी का स्वागत करते हुए आभार व्यक्त किया। मंत्री विनोद कच्छारा ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कोषाध्यक्ष महेन्द्र सिंघवी ने वार्षिक आय व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया।

इसके बाद सभा अध्यक्ष ने पूर्व कार्यकारिणी को भंग करने की घोषणा कर मंच चुनाव अधिकारी को सौंप दिया। चुनाव अधिकारी सूर्यप्रकाश मेहता ने एक मात्र नामांकन होने पर सर्वसम्मति से अर्जुन खोखावत को पुन: अध्यक्ष घोषित किया। नव निर्वाचित अध्यक्ष ने विनोद कच्छारा को पुन: मंत्री बनाने की घोषणा की।

हथेली पर श्वेत.....

(पृष्ठ एक का शेष)

यह भिड़न्त इतनी जोरदार थी कि शाही हाथी का एक दांत उखाड़ दिया गया और सूंड कटकर दूर जा गिरी। इससे हाथी आगे नहीं बढ़ सका और पाछपगा (पीछे) खिसकने लगा जिससे उसने अपने ही सेना के जांबाजों को बुरी तरह कुचल दिया।

इस घटना की साख देता आशाशाह की 13वीं पीढ़ी के वंशधर एडवोकेट अक्षयसिंह देवपुरा ने बताया कि आशाशाह के बाद क्रमशः श्रीपत, दामा (श्रीपत का पांचवा पुत्र), रघुनाथ, रेखचंद, परसराम, भवानीदान, दौलतराम, नारायणदास, जयकिशन, शालग्राम, रूपचंद तथा हरखलाल हुए।

देवपुराजी ने 23 फरवरी 2004 को अपने निवास रावजी का हाटा, उदयपुर में मुझे यह छंद सुनाया जो उन्हें उनके बहीभाट (पोथी वाचक) से सुनने को मिला-

गजदंत उखाड़ण देपुरा, हाथ लिया शमशीर।
जो डूंगरसी पाछो फरे, लाजे कुंभलमीर॥

भावार्थ- अकबर के शाही हाथी के दांत उखाड़ने के लिए वीरवर आशाशाह देपुरा ने अपने हाथ में तलवार उठाई। रणबाज डूंगरसिंह भी कम जोशीला नहीं था। यदि वह इस युद्ध से मुंह मोड़ लेता तो कुंभलगढ़ को लज्जित कर देता।

देवपुरा अक्षयसिंह ने बताया कि पोथी भाट जब भी आता है, इस छंद के अतिरिक्त निम्नांकित तीन और छंदों से शुभराज करता है। ये छंद हैं-

आशाशाह न हुवतो, देपुरो दीवांण।
रांण उदय हो तो नहिं, हुतो न पातळ रांण॥

अर्थात्- यदि आशाशाह देवपुरा दीवानगी धारण नहीं करता तो उदयसिंह नहीं होता और यदि उदयसिंह नहीं होता तो राणा प्रताप नहीं होता।

हिंदुपत री आंण, राखी रांण प्रतापसी।
ता पितु उदया रांण, रखीयो आशा देपुरा॥

अर्थात्- राणा प्रताप ने हिंदूपत की आन रख उसे अकबर के अधीन होने से बचाया। उसके पिता राणा उदयसिंह का आशाशाह देवपुरा ने मान बनाये रखा।

पन्नाधाय न होती तो उदयसिंह न बचता।
आशाशाह देपुरा न होता तो उदयसिंह रांण न बनता।।

अर्थात्- पन्नाधाय यदि नहीं होती तो उदयसिंह जीवित नहीं बचता। आशाशाह देवपुरा यदि नहीं होता तो उदयसिंह राणा नहीं बनता।

उन्होंने बताया कि महाराणा उदयसिंह नहीं होता तो महाराणा प्रताप न होता और यदि महाराणा प्रताप न होता तो हिन्दुत्व न बचता।।

राणा प्रताप जानते थे कि आशाशाह की बुद्धिमत्ता, त्याग एवं समर्पण से ही मेवाड़ राजघराने की सुरक्षा एवं संरक्षण हुआ। वह देवपुरा घराना ही था जिसके कारण पिताश्री उदयसिंहजी का गुमनामी संरक्षण हो सका। इस एहसान से दबे होने के कारण

फतहसागर

उन्होंने उदयपुर का नाम देवपुर रखा किंतु बाद में सरदारों की राय से उन्होंने यह नाम बदलकर अपने पिता उदयसिंहजी के नाम पर उदयपुर कर दिया।

आशाशाह के निरीक्षण में ही उदयपुर की बसावट शुरू हुई। सबसे पहले चित्तौड़ के जीव लाकर बसाये गये। त्रिपोलिया के वहां की गहरी खाई को पाटकर महल बनवाये। महल के पिछवाड़े तालाब बंधवाया जिसका नाम पीछोला दिया। बाद में राणा अमरसिंह ने कुछ और महल बनवाये। इनका समय-समय पर विस्तार होता रहा।

अक्षयसिंह देवपुरा का रहन-सहन अत्यन्त सादगी लिये था। वे मेवाड़ी परम्परा के प्रतिनिधि के रूप में अपनी खास पहचान रखते थे। सिर पर मेवाड़ी पगड़ी, धोती और कोट पहने रहते थे। उनके सुपुत्र भगवतसिंह भी एडवोकेट रहे। भगवतसिंहजी के सुपुत्र नरेन्द्रजी भी उसी पुष्ट परम्परा के एडवोकेट हैं। उन्होंने बताया कि दादाश्री अक्षयसिंहजी का जन्म 09 मई 1918 को और निधन 29 नवम्बर 2016 को हुआ। कपासन से जो पोथीवाचक बड़वाजी आते उनका नाम चौथरामजी था।

मीरां के पति भोजराज ने अपने जीवनकाल में कई शिवलिंग स्थापित किये। सर्वाधिक तो चित्तौड़ में ही किये। गौमुख से पानी की धार जिन दो लिंगों पर पड़ती है वे भोज द्वारा ही स्थापित हैं। इनमें से एक काला तथा दूसरा सफेद है। सफेद पार्वती का रूप

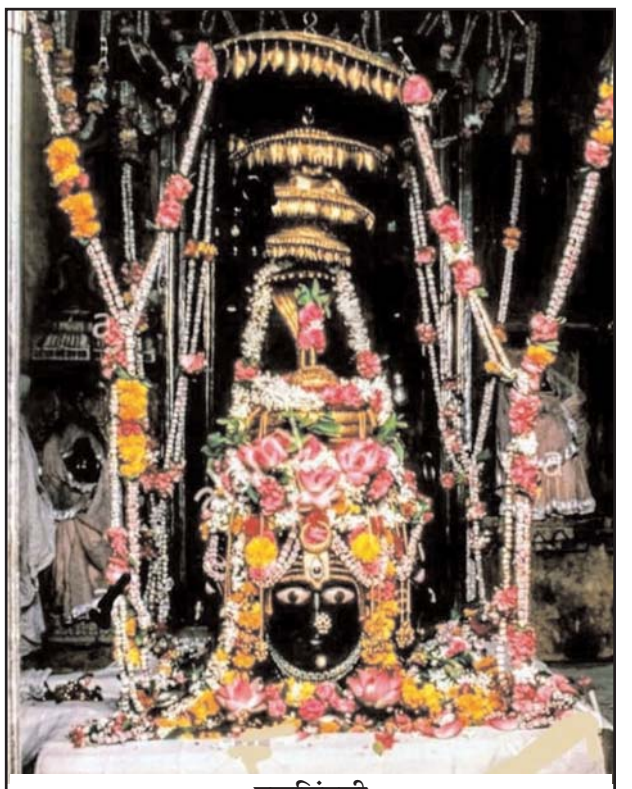

एकलिंगजी

है। इसी कुंड में पांच लिंग और स्थापित हैं। गौमुख कुंड के नीचे घाटी में भी निर्भयनाथ के रूप में एक लिंग स्थापित किया हुआ है।

भोज प्रतिदिन इसकी पूजा के लिए वहां जाते थे। घाटी के नीचे जहां गौमुख कुंड की धार गिरती है वहां भी दो लिंगों की स्थापना की हुई है। यहीं एक पोखरा है। इसमें भी भोजराज ने दो शिवलिंग स्थापित करवाये। सिसोदियों में बारह लिंग-पूजा का प्रचलन है।

एक चौमुख लिंग भोज ने मंगवाकर रख रखा था। इसकी स्थापना वे कहीं ऐसी जगह करवाना चाहते थे जहां तीर्थस्थल के रूप में लोगों का आना-जाना हो सके परन्तु उनके जीतेजी यह कार्य नहीं हो सका।

उनकी मृत्यु के बाद महाराणा प्रताप ने यह कार्य किया। उन्होंने कैलाशपुरी नामक गांव में इसकी स्थापना कराई जो वर्तमान में एकलिंगजी के मंदिर के नाम से जाना जाता है। प्रताप का बनवाया हुआ यह पहला मंदिर है। यह स्थान उदयपुर से लगभग 20 किलोमीटर नाथद्वारा की ओर राष्ट्रीय राजमार्ग पर है।

लिंग स्थापना के बाद प्रताप ने एकलिंगनाथ को अपना राज अर्पण कर उनकी दीवानी धारण की। यह दीवानी पहले नहीं थी। शिव की पूजा तो थी। प्रताप को जब सब ओर से दुश्मनों ने घेर लिया तब सरदारों को एकत्र कर एकलिंगनाथ के श्रीचरणों में उन्होंने अपना राजपाट अर्पित कर दिया। कहा- 'राज म्हारा सूं न संभाल्यो जावे। लोग मार्‌या जावेगा। आप ही मालिक हो।' अर्थात् राज्य मेरे से नहीं संभाला जाता। लोग मारे जायेंगे। आप ही स्वामी हो। शिवलिंग की यह स्थापना प्रताप ने उदयपुर बसाने के बाद की।

चौमुख लिंग से तात्पर्य चार मुख वाले लिंग से है जो चारों दिशाओं का सूचक है। ये चार दिशाएं विजय (पूर्व), ज्ञान (पश्चिम), लक्ष्मी (उत्तर) और काल (दक्षिण) की प्रतीक हैं। काल बुरे वक्त का संज्ञक है। यम का वास भी दक्षिण में है।

भारतीय जनजीवन में शिव, कृष्ण और राम; इन तीनों का सर्वोपरि माहात्म्य रहा। जन गण मन में इनकी प्रतिष्ठा के फलस्वरूप ही शिव को 'लिंग' (शिवलिंग), कृष्ण को 'ग्राम' (शालिग्राम) तथा राम को 'शलाका' (रामशलाका) के रूप में पूजा जाता है।

पुत्रजन्म, विवाह, यात्रागमन, युद्धार्थ प्रस्थान, विजयोत्सव, मंदिर निर्माण जैसे प्रसंगों पर शिवलिंग की प्रतिष्ठा करवाई जाती रही है। भोज द्वारा स्थापित शिवलिंग नेपाल से मंगवाये गये। इन्हें लाने का काम मीणों के जिम्मे था।

आशाशाह देवपुरा महाराणा सांगा का दीवान था। वह केलवाड़ा का रहने वाला था और कुंभलगढ़ का किलेदार था। वह बड़ा बहादुर, दिलेर एवं हौसलेबाज था। इसी की व्यूह रचना में पन्नाधाय बालक उदयसिंह को लेकर डूंगरपुर और फिर प्रतापगढ़ पंहुची किन्तु बणवीर के आंतक के कारण किसी ने उसे पनाह नहीं दी।

पन्ना जैसी उत्कृष्ट एवं वफादार तथा विश्वसनीय धाय मां दूसरी नहीं हुई। उसने कुंभलगढ़ में बारह वर्ष तक उदयसिंह को पालापोषा। इस समय चित्तौड़ पर बणवीर राज्य कर रहा था। यह दासी-पुत्र था।

मेवाड़ के सरदारों एवं जागीरदारों में यह सर्वमान्य राणा नहीं था। पन्ना के साथ एक वारी तथा एक नाई था। अन्त में पन्ना पुनः केलवाड़ा लौटी और आशाशाह के वहीं उदयसिंह को लिए चार वर्ष अज्ञातवास व्यतीत किया। पन्ना धाय गूजर जाति की थी जो राजसमंद जिले के कपासन क्षेत्र की रहने वाली थी। इधर बणवीर ने सब ओर उदयसिंह की मृत्यु की खबर फैलादी।

राज-परिवारों में पुत्रों का लालन-पालन धाय के जिम्मे रहता आया है। धाय ही अपना दूध पिला उसे पालती-पोषती थी। दूध धवाने (पिलाने) के कारण ही वह महिला धाय कहलाती। उसे 'धाय मां' के रूप में माता का महत्त्वपूर्ण दर्जा दिया जाता।

उदयसिंह बणवीर के रास्ते का कांटा था। वह जानता था कि उदयसिंह ही राजपाट का असली हकदार है। अतः समय रहते उसका काम तमाम कर दिया जाय तो सदा के लिए उसका रास्ता साफ हो जाएगा। यह सोच वह कुंभलगढ़ पहुंचा। वह गुस्से में भरा हुआ था। उसकी भुजाएं कांप रही थी और तलवार उदयसिंह का संहार करने को लपलपा रही थी।

महल में पहुंचते ही बणवीर ने जोर की दहाड़ मारी। वहां पन्ना बैठी हुई थी। पास ही में उसका लड़का चंदन सोया हुआ था। बणवीर ने पन्ना से गर्जना भरी आवाज में पूछा- 'कहां है मेरे रास्ते का कांटा उदयसिंह? मैं अभी उसका काम तमाम कर बता देना चाहता हूं। मैं ही इस राज्य का एक छत्र राणा हूं।'

यह सुनते ही पन्ना हड़बड़ा उठी। उसने सोचा यदि उदयसिंहजी को बता दिया तो सदा के लिए हिन्दुआ सूरज अस्त हो जाएगा। अतः पास में सोये अपने पुत्र की ओर इशारा किया। बणवीर ने आव देखा न ताव, उसी पर अपनी तलवार का वार कर एक ही झटके में उसका काम तमाम कर दिया।

पन्ना बड़ी दिलेर और बहादुर महिला थी। उसे अपने पुत्र की मृत्यु का उतना अफसोस नहीं था जितनी अपने प्राणों से प्रिय राजकुमार उदयसिंह को बचाये जाने की खुशी थी। उसकी चिंता

महाराणा प्रताप

यह थी कि किसी तरह उदयसिंह बच जायें मगर अन्य किसी को इस भेद की भनक तक न लगे।

एक समय आशाशाह ने अपने लड़के का विवाह रचाया। इसका निमंत्रण मेड़ता के राव अक्षयराज सोनगरा को भी भेजा। अक्षयराज इस विवाह में स्वयं तो उपस्थित नहीं हो सका किन्तु एक चारण को भेजा।

अक्षयसिंहजी के अनुसार भोज में पकवानों की परोसकारी का जिम्मा अलग-अलग कुंवरों को सौंप रखा था। परोसकारी के समय एक कुंवर ने दूसरे कुंवर से परोसकारी का बर्तन छीन लिया और जोर की थप्पड़ मारदी।

चारण यह हाल देख रहा था। उसे थप्पड़ मारने वाला कुंवर अन्य सभी कुवंरों से डीलडौल, चालढ़ाल तथा बलथल में सवाया और किसी बनिये का पुत्र नहीं होकर राजपूत का बालक लग रहा था।

चारण से रहा नहीं गया। उसने आशाशाह से उस कुंवर बाबत पूछा । आशाशाह ने चारण को अपना विश्वस्त जान अन्दर का सारा भेद बता दिया और कहा कि यह कुंवर उदयसिंह है।

इस पर चारण बोला कि मैं इसका विवाह मेड़ता राव अक्षयराज सोनगरा की बालकी जयन्ताबाई से करवा दूंगा।

- शेष पृष्ठ सात पर

बाजार / समाचार

पेटीएम से डीटीएच रिचार्ज पर ऑफर

उदयपुर (ह. सं.)। पेटीएम के मालिक वन97 कम्युनिकेशंस ने डीटीएच रिचार्जेस पर रोमांचक डेली लक्की ड्रॉ कॉन्टेस्ट की घोषणा की है। इसके तहत आईपीएल सीजन के दौरान प्रतिदन एक भाग्यशाली यूजर को 5,000 रुपये का कैशबैक जीतने का मौका मिलेगा। यूजर्स पेटीएम ऐप पर टाटा प्ले , एयरटेल टीवी, डिश टीवी, डी2एच और सन डायरेक्ट समेत सभी प्रमुख ऑपरेटर्स के रिचार्जेस पर 'डेली डीटीएच धमाल' लकी ड्रॉ कॉन्टेस्ट में भाग ले सकेंगे। इसके लिये कोई न्यूटनतम ऑर्डर वैल्यू नहीं है, इसलिये पेटीएम ऐप के माध्यम से डीटीएच रिचार्ज कराने वाले यूजर्स लकी ड्रॉ में भाग ले सकेंगे। भाग्यशाली विजेताओं के नामों की घोषणा रोजाना होगी।

मुख्यमंत्री दुग्ध संबल योजना में शामिल करने की मांग

उदयपुर (ह. सं.)। सहकारी सिद्धांतों पर किसानों द्वारा बनाए गए 4 संगठनों की 70,000 महिलाओं सहित 1.70 लाख दुग्ध किसानों ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से राज्य सरकार की 5 रूपये प्रति लीटर नकद सहायता योजना में शामिल करने के लिए हस्तक्षेप की मांग की। एक साझा बयान में दुग्ध किसान संगठनों की अध्यक्षा श्रीमती ममता चौधरी पायस डेयरी, जयपुर, श्रीमती मंजीत कौर, सखी डेयरी, अलवर, श्रीमती कन्या, आशा डेयरी, उदयपुर एवं श्रीमती अंजू केवट, उजाला डेयरी, कोटा ने कहा कि हाल ही में पेश वित्तीय वर्ष 2022-23 के बजट में दूध पर सब्सिडी को 2 रूपये प्रति लीटर से बढ़ाकर 5 रूपये प्रति लीटर करने की घोषणा की गई है। योजना में हमें न सम्मिलित करने से पैदा हुई असमानता हमारे लिए गंभीर कठिनाइयाँ पैदा कर सकती है और हमारे हजारों सदस्यों की आजीविका को भी मार सकती है।

पेप्सी ने नया समर एंथम पेश किया

उदयपुर (ह. सं.)। पेप्सी ने एक नया समर एंथम पेश किया है जो पार्टी में जान डाल देगा। यह हर घूंट में स्वैग कैम्पेन की अगली कड़ी है और इसमें दिखायी दे रहे हैं भारत के दो सबसे बड़े यूथ आइकॉन्स - बादशाह और जैकलिन फर्नांडीज जो अपनी संगीतमय हैट्रिक के साथ भारत में तूफान बरपा करने के लिए तैयार हैं। पेप्सी ने इस कैम्पेन को साकार करने के लिए वन डिजिटल एंटरटेनमेंट और यूनीवर्सल म्यूजिक ग्रुप के साथ भागीदारी की है।

पेप्सिको इंडिया की कैटेगरी लीड, कोला सौम्या राठौर ने कहा कि कल्चर क्यूरेटर के नाते, पेप्सी हमेशा ग्राहकों से जुड़ाव को मजबूत करती रही है और एक बार फिर ब्रैंड म्युजिक और डांस के साथ हाजिर है। इस बार, बेहद लोकप्रिय सुपरस्टार्स के साथ मिलकर दुनियाभर की दमदार संस्कृतियों को एक साथ लाने की तैयारी है। इस नए एंथम के बोल 'चैक माइ फिज' दरअसल, आज के युवाओं के खुद पर अदम्य भरोसे का जश्न मनाने के लिए तैयार हैं।

एलपीजी बुकिंग पर पेटीएम से कैशबैक

उदयपुर (ह. सं.)। पेटीएम की स्वत्वाधिकारी, वन97 कम्युनिकेशंस लि. (ओसीएल) ने देशभर में गैस सिलेंडर की बढ़ती कीमतों से निपटने में यूजर्स की मदद के लिए एलपीजी सिलिंडर बुकिंग और उसके भुगतान पर दो रोमांचक कैशबैक ऑफर की घोषणा की। पेटीएम ऐप पर दोनों ऑफर पहले से ही लाइव हैं। नए यूजर्स के लिए यह ऑफर पहली एलपीजी गैस सिलिंडर बुकिंग या पेटीएम के माध्यम से मौजूदा बुकिंग के भुगतान पर 50 रुपये से 1,000 रुपये तक का कैशबैक जीतने का मौका देता है। उन्हें लेनदेन के दौरान प्रोमो कोड फर्स्टगैस दर्ज करना है। अन्य कैशबैक ऑफर सभी मौजूदा यूजर्स या उपयोगकर्ताओं पर लागू होता है, जहाँ वे एलपीजी सिलिंडर बुक करते समय या पेटीएम से बुकिंग के लिए भुगतान करते समय प्रोमो कोड जीएएस 1000 दर्ज करके 10 रुपये से 1,000 रुपये तक का कैशबैक जीत सकते हैं।

एचडीएफसी बैंक 1,000 से ज्यादा शाखाएं खुलीं

उदयपुर (ह. सं.)। अपने प्रोजेक्ट फ्यूचर रेडी के तहत, एचडीएफसी बैंक ने घोषणा की कि वह पिछले दो सालों में अपने नेटवर्क में 1,000 से ज्यादा नई शाखाएं शामिल कर चुका है। महामारी के दौरान, बैंक ने प्रतिदिन दो नई शाखाएं खोलीं, और अकेले वित्तवर्ष 2022 में 734 नई शाखाएं खोली गईं।

एचडीएफसी बैंक ने 31 मार्च, 2022 को भारत में एक साथ सबसे ज्यादा शाखाएं खोलने का एक नया रिकॉर्ड बनाया, जब शशि जगदीशन, एमडी एवं सीईओ, एचडीएफसी बैंक ने डिजिटल रूप से एक साथ 250 शाखाएं लॉन्च कीं। इस रिकॉर्ड को एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स और इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में आधिकारिक मान्यता मिली है। 31 मार्च, 2022 को बैंक के वितरण नेटवर्क में 3,188 शहरों/कस्बों में 6,342 शाखाएं और 18,130 एटीएम थे। इससे पहले बैंक ने अपने स्थायी कर्मचारी आधार में 90 प्रतिशत बढ़ोत्तरी करने की घोषणा की थी, और 31 मार्च, 2022 को बैंक के पास 141,579 कर्मचारी हो गए थे। देश में शाखाओं के विशाल रिटेल नेटवर्क से बैंक को अपनी मौजूदगी और व्यवसाय बढ़ाने में मदद मिलेगी।

दुर्लभ बीमारी की सफल सर्जरी

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पिम्स) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने दुलर्भ बीमारी से ग्रसित किशोर की सफल सर्जरी की है।

चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि गत दिनों पाली निवासी 16 वर्षीय किशोर अंकित (बदला हुआ नाम) को खाना खाने में समस्या के चलते पिम्स हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। जांच करने पर पता चला कि मरीज 'सुपीरियर मेसेंटरिक आर्टरी सिंड्रोम' नामक दुर्लभ बीमारी से ग्रसित है। यह बीमारी अत्यंत दुर्लभ है और पूरे विश्व में इस बीमारी के गिनती के केस मिले हैं।

ऑपरेशन के दौरान आंतों को अलग ढंग से जोड़ कर दूसरा रास्ता बनाया गया। यह सफल ऑपरेशन तीन घंटे चला। किशोर अब स्वस्थ है व खाना खा रहा है। ऑपरेशन में पीडियाट्रिक विभागाध्यक्ष डॉ. सुरेश गोयल, सर्जन डॉ. अतुल मिश्रा, डॉ. विवके पाराशर, डॉ. राहुल खत्री, डॉ. नरेश त्यागी व अन्य स्टाफ की महत्वपूर्ण भूमिका रही। किशोर का ईलाज चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत निःशुल्क किया गया।

रसना और पेटीएम में भागीदारी

उदयपुर (ह. सं.)। मेक इन इंडिया के आइकॉन रसना ने एक नया ऐड कैम्पेन लॉन्च किया है। इस कैम्पेन के तहत पेटीएम के साथ भागीदारी में रसना के ग्राहकों को 100 प्रतिशत तक कैशबैक दिया जा रहा है। रसना के 32 ग्लास, 10 ग्लास और 5 रुपये के पैक खरीदने वाले ग्राहकों को तुरंत कैशबैक मिलेगा।

रसना ग्रुप के चेयरमैन पिरुज़ खम्बाटा ने कहा कि ग्राहक पैक को खरीदने के बाद पैक के पेटीएम क्यूआर कोड को पेटीएम ऐप के माध्यम से स्कैन कर इस कैशबैक ऑफर का फायदा उठा सकते हैं। कैशबैक के अलावा मूवी टिकट बुकिंग, फ्लाइट बुकिंग, मोबाइल एवं डीटीएच रिचार्ज, आदि पर भी कई ऑफर्स उपलब्ध हैं।

पेटीएम के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट नरेन्द्र यादव ने कहा कि पेटीएम के साथ यूजर्स को भुगतान के विकल्पों का लचीलापन मिलता है, जैसे पेटीएम वालेट, पेटीएम यूपीआई, पेटीएम पोस्टपेड (बाय नाऊ, पे लेटर), नेटबैंकिंग, डेबिट एवं क्रेडिट कार्ड्स, आदि। रसना ऐसा सॉफ्ट ड्रिंक है, जिसे देशभर में काफी पसंद किया जाता है और हम गर्मी के दौरान उपभोक्ताओं को थोड़ी राहत देने के लिये रसना के साथ भागीदारी करके बहुत खुश हैं।

रेंज रोवर स्पोर्ट्स का शानदार ग्लोबल प्रीमियर

उदयपुर (ह. सं.)। नई रेंज रोवर स्पोर्ट्स का ग्लोबल प्रीमियर दुनिया भर में पहली बार आइसलैंड में बांध के रैंप पर पानी से लबालब भरे रास्ते से गुजरकर डैम की ऊंचाई तक पहली बार गाड़ी की चढ़ाई कराकर शानदार अंदाज में किया गया। जगुआर लैंडरोवर के व्हीनकल प्रोग्राम्स के कार्यकारी निदेशक निक कॉलिन्स ने कहा कि गाड़ी की ऐतिहासिक और जबर्दस्त चढ़ाई ने यह दिखाया कि नई रेंज रोवर स्पोर्ट्स 750 टन प्रति मिनट की दर से दुनिया में अपनी तरह के सबसे बड़े करहंजुकर बांध के रैंप से पानी की बहती धार का काफी मजबूती से सामना कर सकती है। गाड़ी खींचने में जरा सी ढिलाई से 90 मीटर नीचे जमीन पर गिरने का खतरा था। लैंड रोवर में पहली बार एमएलए फ्लेक्स आर्किटेक्चर और सबसे नवीनतम चेसिस सिस्टम का एक साथ प्रयोग किया गया है।

एचडीएफसी बैंक देगा 30 मिनट में कार लोन

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने 'एक्सप्रेस कार लोन' सेवा लॉन्च की है जिसमें ग्राहकों को 30 मिनिट के अंदर कार खरीदने के लिए ऋण सुविधा मंजूर करने का वादा किया है। इस उद्योग की पहली सुविधा से देश में कार वित्तपोषण के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव की उम्मीद है। एचडीएफसी बैंक ने कार खरीदारों के लिए एक व्यापक, तेज, अधिक सुविधाजनक और समावेशी डिजिटल यात्रा तैयार की है। यह कार खरीद प्रक्रिया को सरल बनाने और अर्ध शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों सहित देश भर में कार बिक्री को बढ़ावा देने में मदद करेगा।

एचडीएफसी बैंक रिटेल एसेट्स के कंट्री हेड अरविंद कपिल ने कहा कि हम मौजूदा और नए ग्राहकों के लिए एंड-टू-एंड डिजिटल कार लोन सॉल्यूशन लॉन्च करके कदम आगे बढ़ा रहे हैं।

पेटीएम मनी ने डीमैट खाता खोलना किया आसान

उदयपुर (ह. सं.)। भारत की अग्रणी डिजिटल भुगतान एवं वित्तीय सेवा कंपनी, ब्राण्ड पेटीएम के स्वामी वन97 कम्युनिकेशंस लि. ने घोषणा की है कि उसके पूर्ण-स्वामित्व वाली अनुषंगी पेटीएम मनी, एलआईसी आईपीओ को रिटेल स्टोर्स में पहुँचाने के लिये तैयार है। कंपनी ने देशभर के किराना स्टोर्स पर क्यूआर कोड्स रखे हैं, ताकि आम आदमी मुफ्त डीमैट खातों से निवेश की ताकत का जीवनभर फायदा ले। इन क्यूआर कोड्स का उपयोग कोई भी व्यक्ति अपने मुफ्त डीमैट खाते बना सकता है, जोकि स्टॉक बाजार में व्यापार के लिये अनिवार्य होते हैं, और फिर वह व्यक्ति एलआईसी आईपीओ के लिये बिड कर सकता है।

कैटरीना मेडिमिक्स की ब्रांड एंबेसेडर बनीं

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के अग्रणी आयुर्वेदिक पर्सनल केयर ब्राण्ड्स में से एक मेडिमिक्स ने कैटरीना कैफ को अपना ब्राण्ड एंबेसेडर बनाया है।

घर-घर में जाना-पहचाना ब्राण्ड मेडिमिक्स पिछले 50 वर्षों में प्राकृतिक तरीके से त्वचा की देखभाल का पर्याय बनकर आगे बढ़ा है। अपनी पोजीशनिंग तेजी से काम करने वाले आयुर्वेद से त्वचा को स्वस्थ बनाएं के साथ इस ब्राण्ड का लक्ष्य ऐसे युवाओं तक पहुँचना है, जो क्षमता या प्रभाव से समझौता किये बिना रसायन से मुक्त प्राकृतिक आयुर्वेदिक उत्पादों पर बड़ी संख्या में सचेत हो रहे हैं। कैटरीना कैफ प्राकृतिक रूप से स्वस्थ रहने में पक्का यकीन रखती हैं और उन्होंने अपनी त्वचा को स्वस्थ रखने के लिये मेडिमिक्स साबून और बॉडीवाश रेंज में आयुर्वेद के गुणों और इसकी सर्वश्रेष्ठ सामग्रियों पर भरोसा किया है।

आर्किटेक्ट कपिल इंटोदिया सम्मानित

उदयपुर, (ह. सं.)। शहर की युवा प्रतिभा आर्किटेक्ट कपिल इंटोदिया (जैन) को बाड़मेर के चीवा गांव में 10 करोड़ की लागत से बन रहे स्पोर्टस कॉम्प्लेक्स भूमि पूजन समारोह में सम्मानित किया गया। साथ ही कपिल जैन को इस निर्माण कार्य के लिए आर्किटेक्ट व तकनीकी सलाहकार के रूप में भी नियुक्त किया गया है। उन्हें यह सम्मान ग्रामीण विकास एवं चेतना संस्थान एवं राज्यपाल, प्रधानमंत्री व महिला सशक्तिकरण के लिए कई संगठनों से सम्मानित हो चुकी रूमादेवी द्वारा प्रदान किया गया। बाड़मेर के चवा में रूमादेवी-सुगणीदेवी स्पोर्टस कॉम्प्लेक्स का गत 7 मई को भूमिपूजन समारोह के दौरान रूमादेवी व बीसीसीआई चयन समिति के अध्यक्ष चेतन शर्मा द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया। कपिल ने बताया कि उन्हें इस निर्माण कार्य के लिए आर्किटेक्ट व तकनीकी सलाहकार बनाया गया है। ऐसे में वे प्रयास करेंगे कि ऐसे स्पोर्टस कॉम्प्लेक्स का निर्माण हो जो तकनीकी तौर पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर का हो।

हथेली पर श्वेत.....

(पृष्ठ पांच का शेष)

चारण ने मेड़ता पहुंच अक्षयराज को सारी घटना कह सुनाई। अक्षयराज के लिए इससे बढ़िया प्रस्ताव और क्या हो सकता था कि यदि उसकी कुंवरि उदयसिंह से ब्याही जाती है तो वह मेवाड़ की महारानी बनेगी।

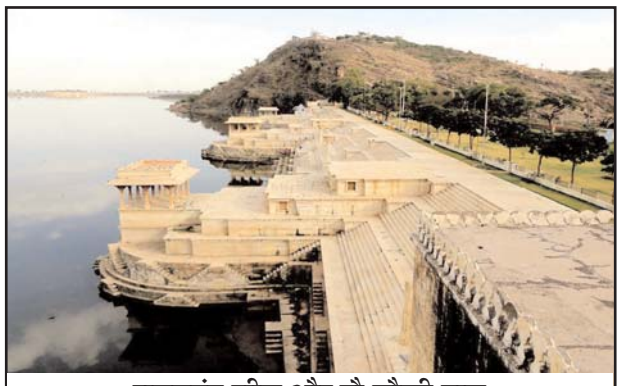

राजसमंद झील और नौ चौकी पाल

आशाशाह भी चाहता था कि इस विवाह से उसे अक्षयराज से बड़ा संबल मिलेगा जिससे वह बणवीर का प्रभुत्व क्षीण कर सकेगा। यही हुआ। बणवीर को गद्दी से उतार उदयसिंह (16) को राजगद्दी पर बिठाया गया।

प्रताप इसी जयन्ताबाई के पुत्र थे जो उदयसिंह के बाद मेवाड़ के महाराणा बने। महाराणा बनने के बाद उदयसिंह ने उस चारण को राजसमंद जिले का मेंगटिया गांव जागीर में दिया।

इसी चारण वंश में ईसरदान आशिया हुए जिन्होंने केसरीसिंह बारहट की बड़ी पुत्री चन्द्रमणि से विवाह किया।

कोटा के बारहट राजेन्द्रसिंह (92) ने बताया कि चन्द्रमणिदेवी उनकी बुआ थी। बारहट केसरीसिंह, उनके भाई जोरावरसिंह और पुत्र प्रतापसिंह के साथ ईसरदान भी क्रांतिकारियों की अग्रिम पंक्ति में थे। तीनों बारहट वीर- शिरोमणियों के साथ ईसरदान भी जेल में रहे। उदयपुर में ईसरदानजी से मेरी कईबार भेंट हुई। वे बड़े साहित्यप्रेमी और प्राचीन डिंगल काव्यधारा के गंभीर अध्येता थे। केसरीसिंह बारहट के साथ वे गांधी आश्रम, वर्धा में महात्मा गांधी के संपर्क में भी आये। उन्होंने पिलानी के बिड़ला शोध संस्थान में भी काम किया। चारण पत्रिका का संपादन भी किया और आजीवन खादी पहनी। वे लंबी बांहों का कुर्ता पहनते थे पर उनके एक हाथ ही था।

राजेन्द्रसिंहजी ने भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर में अपनी सेवाएं दीं तब मैं भी उनके साथ खोज विभाग में था। ईसरदानजी की 16वीं पीढ़ी में उनके पुत्र मणिराज सुखाड़िया विश्वविद्यालय में सेवारत थे। वे भी मेरे सम्पर्क में रहे।

ओसवालों ने सदैव ही महाराणाओं के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर अपनी सेवाएं अर्पित कर संकट की घड़ी में महत्वपूर्ण योग दिया है। महाराणा कुंभा के समय भी कुंभलगढ़ में नरसिंहदास के वंशज कोचरजी ने धनरक्षक की भूमिका निभाई जिसके कारण वे धनरेचा कहलाये। इनका परिवार कुंभलगढ़ में पीतल का व्यवसाय करता था।

मुगलों की घेराबंदी के कारण कुंभलगढ़ के सारे मार्ग बंद हो गये। तोप के गोलों के लिए पीतल की आवश्यकता हुई। कोचरजी महाराणा के मरजीदान एवं विश्वस्त होने के कारण लोग उनसे ईर्ष्या करते थे। उन्होंने मौके का लाभ उठाते कोचरजी का नाम सुझाते हुए सोचा कि संकट की इस घड़ी में समर्थ होते हुए भी कोचरजी धन के प्रलोभन के कारण पीतल सप्लाई नहीं कर सकेंगे। इससे वे महाराणा की निगाहों से उतर जायेंगे।

राणा का आदेश पा धनरेचा इतनी पीतल नहीं होने पर निरूपाय और असहाय हो मां अम्बा की आराधना में लग गये। तीसरे दिन रात्रि को माता की प्रतिमा से एक महिला प्रकट हुई। बोली, 'सुबह होते दरबार में जा राणाजी को विनयपूर्वक मनचाही पीतल ले जाने के लिए आमंत्रित करना। तुम दुकान के भण्डार कक्ष से आज ही सारी पीतल तोल देना।' यही हुआ। भरे दरबार में कोचरजी का सभासदों के बीच निर्भय वाणी, अटूट विश्वास और गम्भीर चुनौतीपूर्ण दमखम देख सभी स्तब्ध रह गये। महाराणा ने संकट काल में इस सहयोग के लिए कोचरजी को 'पीतलिया सेठ' के संबोधन से अलंकृत किया। कोचरजी ने पीतल के बदले एक भी पैसा नहीं लिया। कहा, 'वरोठमाता की कृपा से यह सब चमत्कार हुआ।' महाराणा ने तब वास्तुविद सूत्रधार मंडन के मार्गदर्शन में वरोठमाता का मन्दिर बनवाया। पीतलिया सेठ से आगे जाकर पीतलिया गोत्र ही बन गई।

शहर की अन्य विशेषताओं के साथ नगर के चारों ओर विशाल कोट, परकोटा ही इतना मजबूत है कि उदयपुर शहर हर तरह से सुरक्षित, संरक्षित तथा साधन-सुविधा से सम्पन्न बना रहे। यह परकोटा कोई साधारण नहीं होकर 9 किलोमीटर लम्बी, 2 मीटर चौड़ी, 5 फीट ऊंची तथा 3 बाय 3 मीटर की नींव पर अपनी मजबूती लिए पहचाना गया। यह निर्माण कुम्भलगढ़ के ख्यात शिल्पाचार्य मण्डल के वंशज पिता-पुत्र हमीर-वाघा की पैनी देखरेख में तैयार हुआ। यहीं कर्नल जेम्स टॉड ने पहला इतिहास ग्रन्थ 'एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान' लिखा। कविराज श्यामलदास ने 'वीर विनोद' नामक मेवाड़ राजघराने के प्रामाणिक इतिहास की रचना यहीं की और यहीं गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के लिखे इतिहास-भाग भी अस्तित्व में आये।

स्वाभिमान और स्वाधीनता की आजादी के तरानों वाला, हर आने वाले मेहमानों को 'भला पधार्‌या पामणा' कह आत्मीय आवभगत करने वाला उदयपुर अब स्मार्ट सिटी में शुमार हो गया है।

यहां की झीलों के ठंडे पानी और सुकूनदायी हवाओं का स्पर्श पाकर इठलाती बलखाती सर्पाकार, पर्वतमालाओं से घिरे उदयपुर को विश्व के सुन्दरतम शहरों में गिना जाता है। रेल, सड़क और वायुमार्ग से यह अच्छी कनेक्टिविटी लिए है। यहां इतिहास और संस्कृति, एक साथ पले-बढ़े और वैभव तक पहुंचे। आयड़ नदी के किनारे 4000 वर्ष ईसा पूर्व पुरासभ्यताओं के साक्षी बने अवशेष एक अलग ही नजारा देते हैं।

सच ही है, अतीत को वर्तमान और वर्तमान को अतीत में जीता यह शहर आगे बढ़ रहा है। इसका अंदरुनी भाग अपने में शौर्य और वीरता की अनुगूंज देता, विस्तार पाता फैलता गया। किसी समय उदयपुर मेवाड़ की राजधानी रहा। इसके चारों ओर अरावली और विंध्याचल की पहाड़ियों की ठोस सीमाएं हैं। सीमांकन के लिए बनने वाले परकोटे को 'वाड़' कहते हैं। वाड़ के भीतर यह उसी तरह सुरक्षित बसावट लिए है, जैसे नारियल के ठोस गोले के भीतर उसकी गिरी सुरक्षित रहती है।

मगरे-मगरियों के बीच इसकी बेतरतीब ऊंची-नीची, आड़ी-तिरछी बसावट के नाम ही बड़े अनोखे अजूबे हैं। पोल, सेरी, वाड़ा, ओल, टिम्बा, गली, घाट, टेकरी, वाड़ी, घाटी, दरवाजा, महल, बावड़ी, चौहट्टा, पुरी, खिड़की, चौक, पुरा, नाल, मण्डी, मगरी, खुर्रा तथा कांटा जैसे सम्बोधनों से बस्तियों के नाम अपनेआप में इतिहास, संस्कृति, धर्म, कर्म तथा घटना विशेष का बोध कराते हैं। बारह तो यहां पोलें ही थीं।

पूर्वाभिमुख लिए सूरजपोल, पश्चिम दिशा में चांदपोल, हाथियों की निकासी के लिए हाथीपोल तथा सजाधारी को दण्ड देकर निष्कासित करने के लिए दण्डपोल के अलावा ब्रह्मपोल, उदियापोल, रामपोल, कोलपोल, सतापोल आदि अपने में तत्कालीन समाज तथा घटनाक्रम के इतिहासजनित अनेक सुनहरे पृष्ठ लिये हैं।

हाथीपोल स्थित भूतमहल यति द्वारा उड़ाकर लाया गया। ऐसी ही यहां दैत्य मगरी है। प्राचीनकाल में यति ऐसी क्रियाएं कर अनेक मंदिर, वृक्ष, छतरियां, भवन और समाधिस्थल एक स्थान से उड़ाकर दूसरे स्थान ले गए। वर्तमान में भूतमहल तथा दैत्य मगरी के नाम से पूरी बस्तियां जानी जाती हैं। यहां का हिरणमगरी क्षेत्र किसी समय हिरणों का घोर जंगली क्षेत्र था। अब इस बस्ती क्षेत्र में न कोई हिरण और न कोई मगरी है। नगर की स्थापना में भारतीय स्थापत्य शास्त्र के सिद्धांतों का पूरा ध्यान रखा गया। इसीलिए ऐसी विशेषताएं अन्यत्र कहीं नहीं मिलेंगी।

मेवाड़ शासकों के आश्रय में यहां सबसे अधिक वास्तुग्रंथ लिखे गए। वास्तुकारों ने 9 गुणा 9 रेखाएं डालकर 81 कोष्ठकों को कल्पित किया। चारों दिशाओं में देवताओं के तीर्थस्थलों में आदिवासियों का कालाबाबा केसरियाजी, कैलाशपुरी के

गुलाबबाग

एकलिंगजी, नाथद्वारा के श्रीनाथजी, गढ़बोर बिराजे चारभुजाजी और सबसे अधिक भेंट-भेंटावण, चढ़ावा लिए सेठ सांवरियाजी इसके साक्षी हैं।

यहां का जगदीश मंदिर तथा राजसमंद झील की 'नौ चौकी' दर्शनीय है। नौ चौकी स्थित पाल पर लगी 25 शिलाओं पर उत्कीर्ण राजप्रशस्ति महाकाव्य महाराणा राजसिंह के गुण-गौरव-समाज को चरितार्थ किये है। इसे विश्व का सबसे बड़ा शिलालेख होने का श्रेय प्राप्त है।

सन् 1964-66 के दौरान संस्कृत विद्वान कृष्णचन्द्र शास्त्री तथा मैंने इन शिलाओं के इम्प्रेशन लिये थे तब डॉ. मोतीलाल मेनारिया साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ के डायरेक्टर थे। मैं

चांदपोल दरवाजा

तथा शास्त्रीजी वहां शोध अधिकारी थे। बाद में राजप्रशस्ति महाकाव्य का प्रकाशन हुआ। यहीं रह मैंने महाराणा जवानसिंह लिखित पदों का संकलन, पाठ-संपादन कर 'ब्रजराज-काव्य-माधुरी' नाम से पुस्तक तैयार की थी जिसका प्रकाशन हुआ। महाराणा जवानसिंह कविता-सृजन में 'ब्रजराज' की छाप दिया करते थे। मैंने यहां रह 'शोध पत्रिका' का सम्पादन करते हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज, राणा रासो का संपादन भी किया। पं. जनार्दनराय नागर, जनुभाई ने सबसे पहले सुदूर आदिवासी क्षेत्रों तक शिक्षा का लालटेन जलाया। देवीलाल सामर ने लोककला-संस्कृति का संरक्षण करते हुए पूरे विश्व में स्थायी वातावरण बनाया और हर जाति, वर्ग, धर्म के लोगों को जागरूक किया।

राजघराने के भगवतसिंह मेवाड़ ने महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन की स्थापना कर अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा राज्यस्तरीय पुरस्कारों के साथ शिक्षा क्षेत्र में विशिष्ट प्रतिभासम्पन्न छात्रों को सम्मानित करने का शाही सम्मान प्रारंभ किया जो अपने प्रकार का विश्व में

भगवतसिंह मेवाड़, अरविंदसिंह मेवाड़ तथा लक्ष्यराजसिंह मेवाड़

अतुलनीय बना हुआ है। अरविंदसिंह मेवाड़ तथा उनके उत्तराधिकारी लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ इस परंपरा का बखूबी निर्वाह कर रहे हैं।

वास्तु के हिसाब से ही उदयपुर में विभिन्न समुदायों, कर्म-कांडियों व जीवनोपयोगी विविध कारु-चारु शिल्पियों को बसाया गया। महाराणा से जुड़े सौलह-बत्तीसा राव-उमराव, सरदार तथा राजपरिवार के पदाधिकारियों के लिए निराली हवेलियों का निर्माण किया गया। ऐसी लगैठगै दो सौ हवेलियां और उनकी अद्‌भुत ललाम चित्रकारी आज भी चमक लिये है। इनकी चित्रकारी पर चित्रसेन ने पीएच. डी. प्राप्त की। जलाशयों के साथ ही उदयपुर की पहचान यहां के उद्यानों, बावड़ियों तथा बाड़ियों के कारण भी बनी। सहेलियों की बाड़ी, सर्वऋतु विलास तथा गुलाबबाग पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से भी बड़े उपयोगी तथा महत्वपूर्ण हैं। सहेलियों की बाड़ी प्राकृतिक फव्वारों के लिए जानी जाती है। सर्वऋतु विलास में छहों ऋतुओं का आनंद लिया जा सकता है। जलाशयों मे पीछोला, स्वरूपसागर, दूधतलाई, फतहसागर, गोवर्धनसागर उदयसागर, जयसमंद, राजसमंद जैसे जलाशय अपनी प्राकृतिक छटा के लिए पर्यटकों के मनबहलाव के अतुलनीय उत्सव बने हुए हैं।

महाराणा सज्जनसिंह के बुलावे पर महर्षि दयानंद सरस्वती यहां आए। जुलाई, 1882 में सज्जन निवास उद्यान के नौलखा महल में उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रंथ की रचना की। यही उद्यान बाद में गुलाबबाग के नाम से जाना गया। इन्हीं महाराणा ने मानसून पैलेस के रूप में अतुलनीय 'सज्जनगढ़' का निर्माण कराया। अपने नाम पर सज्जन यंत्रालय छापाखाना स्थापित कर 'सज्जन कीर्ति सुधाकर' नामक पहला साप्ताहिक पत्र प्रारम्भ किया।

गुलाबबाग में अनेक प्रकार के पेड़-पौधे जो भी राजदूत यहां आया वह अपने साथ लाया। आम, हरड़, गूंदा, इमली, गूलर, धोकड़ा, शमी, तमाल, ताल, शाल, हिंताल, काल, नारियल, खजूर, नीम, कदाम जामुन महुवा सुपारी, चंदन, तिलक जैसे सैंकड़ों तरह के पेड़-पौधे और वनस्पतियां यहां देखने को मिलती हैं। पेड़पौधे जलात्मक और फलात्मक दोनों दृष्टियों से बेजोड़ हैं। सच तो यह है कि पूरे विश्व में उदयपुर ऐसा सौन्दर्य से लकदक शहर है जैसे चांदनी रात में हथेली पर श्वेत कमल खिला हो।

- समाप्त

राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण (11)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

4 अक्टूबर 1968 को हम उदयपुर से चलकर मावली पहुंचे। यहाँ अम्बालाल सालवी नामक प्रसिद्ध गायक भोपे से सम्पर्क कर उससे इस क्षेत्र की कलात्मक धरोहर सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की गई। अम्बालाल के पास विविध लोक देवी-देवताओं के भारत की अद्‌भुत गायकियों का अखूट भण्डार है। भारतीय लोककला मंडल में आमंत्रित कर इस भोपे से लगभग 500 पृष्ठों की देवचरित बगड़ावत तथा विविध भारत रेकार्डिंग कर लिपिबद्ध किये गये।

सालवी ने कहा कि यहीं रासधारी के अच्छे खिलाड़ी हैं। अत: उसको साथ लेकर हम खिलाड़ियों की खोज करते हुए बालूदास वैरागी से मिले। वैरागी सन् 1958 में कला मण्डल के तत्वावधान में बेदला में आयोजित अखिल राजस्थान लोक कलाकार प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षत किये गये थे। अब तो वृद्ध हैं। शौकिया रूप में ये 5-7 वर्ष पूर्व तक रासधारी का ख्याल करते थे परन्तु अब इस ओर कोई रुचि दिलचस्पी नहीं रही।

रासधारी ख्यालों के सम्बन्ध में इनसे कोई विशेष जानकारी नहीं मिली। यहाँ के गोवर्धन लखारा भी रासधारी के अच्छे कलाकार हैं परन्तु वे कहीं बाहर गये हुए थे अत: इनसे भेंट नहीं हो पाई। सायंकाल यहाँ हमने भूणाजी का देवरा देखा जिसमें ईंट के रूप में देवनारायण की थापना की हुई है। पुजारी ऊंकारजी सुथार ने बताया कि ईंट पर देवनारायण का थापा है।

सालवी ने बताया कि यहाँ से दो मील दूर लद्‌दानी में ताखा राजकंवार का प्रसिद्ध देवरा है। अत: हम तीनों साइकिलों पर ताखाजी की तगत (तख्त) पर गये। यह देवरा लगभग 100 वर्ष पुराना है। इसके पुजारी सोलंकी जोधसिंहजी ने बताया कि उनके दादा देवजी वांणी नामक गांव में रहते थे। एकबार वे कुरज गौना लेने जा रहे थे तब रास्ते में एन्हें चुड़ैल लग गई। इससे वे बड़े दुखी हो गये। देव-देवरे भटकते रहे पर कामयाबी नहीं मिली। किसी की कला नहीं लगी तब वे विवश हो देवों को कोसने लगे। एक रात को उन्हें स्वप्न आया कि लद्‌दानी मगरी पर केर के वृक्ष के वांदके (बाँबी) में शुक्रवार को जाकर यदि दूध डालो तो तुम्हारा कष्ट दूर हो सकता है। देवजी ने यही किया फलत: वे चंगे हो गये । प्रतिदिन वे शुक्रवार को सेवा-पूजा करने लग गये।

सलूम्बर रावजी ने यहाँ अपनी बाई की कोढ़ ठीक होने के उपलक्ष्य में देवरा बनवाया। देवरे में हिंगाण (मूर्ति) नहीं है। केवल ईंट हैं। उसके केशर, मालीपना चढ़ती है। सिन्दूर नहीं। चराणा भमरास्या में भी ताखाजी का देवरा है। इसी प्रकार भाणोल में जोइड़ा बावजी (खोड्या भेरू) का, सोन्याणा में अठोल्या भेरू का तथा खजूरया में लाला-फूलां का देवरा है। ताखा का पिता गोग चुहाण था जिसे खाकल देव के रूप में पूजते हैं।

रात्रि को मावली से दो किलोमीटर दूर सालेरा में 60 वर्षीय प्रसिद्ध कथक्कड़ गोकुलजी नगारची से भेंट करने गये। गोकुलजी मिल तो गये परन्तु उनके अधिक व्यस्त रहने के कारण कोई बातचीत नहीं हो पाई फलत: हम उन्हें प्रात: मावली में आने का निमंत्रण देकर लौट आये।

दूसरे दिन प्रात: गोकुलजी से केसरीसिंहजी ठाकुर के लकड़ी चीरने के कारखाने पर, जहाँ हमने रात्रि विश्राम लिया, भेंट हुई। गोकुलजी को कई बातें कंठस्थ हैं। हमने सोरठ तथा सेणी चारणी की बातों के नमूने सुने। बड़ा रस बरसा। पूछने पर पता लगा कि ये बातें उन्होंने लोपड़ा गांव के भेराजी नगारची से सीखीं। ब्याह-शादियों पर तथा फुर्सत की रात्रि में उनकी कथा-वार्ताओं के जमघट जुड़ते रहते हैं।

अगला प्रकाशन चूकि हम रासधारी ख्यालों पर दे रहे थे इसलिए इस क्षेत्र में प्रचलित रासधारी स्थानों पर समग्र जानकारी प्राप्त करना अत्यावश्यक था। यहां जब हमें पता लगा कि भूपालसागर में नानू वैरागी अच्छे ख्यालकार हैं तो हमने यहाँ से सीधा भूपालसागर जाना उचित समझा।

भूपालसागर पहुंचकर नानूजी का पता लगाने निकले तो रास्ते में ही उनका सहज मिलना हो गया। वहीं पास ही साइकिल की दुकान पर बैठकर हमने अपना मंतव्य उनके सामने रखा तो उन्होंने जानकारी देते हुए कहा, 'निम्बाहेड़ा के पास रतनपुर के फकीर मोहम्मद का पहले अच्छा माना हुआ दल था। उसमें कालू तथा भेरा दोनों भाई बड़े ऊंचे कलाकार थे। कालू तबला बजाता था तथा भेरा जनाना स्वांग बनता था। यहां से दो मील दूर राइपुरिया गांव में कालू अभी भी है पर रासधारी के सम्बन्ध में जो जानकारी आप चाहते हैं वह तो फकीर मोहम्मद से ही प्राप्त की जा सकती है।

कपासन के लक्ष्मण भाट का भी अच्छा दल था। वहां के नन्दलाल, चुन्नीलाल कुचामणी खेल करते हैं। प्रारम्भ में रासधारी

रासधारी ख्याल प्रदर्शित करते कलाकार

मुख जबानी चलती थी। सर्वप्रथम राम-वन-झांकी करते थे। उसके बाद हरिश्चंद्र, कृष्णलीला, चन्द्रावल तथा दो जोरू का खेल करते थे। मुकुट ऊंची कौम के लोग ही धारण करते थे। स्टेज नहीं होता था। खुले में जाजम डालकर खेल किया जाता था। आरती का एक रुपया लेकर फिर खेल प्रारंभ करते थे। गांव के पटेल से एक रुपया लेकर खेल तय करते थे। मैं अब तो कथा करता हूं । खेल-वेल सब छोड़ दिये हैं।

यहीं हमें पता लगा कि शरद पूर्णिमा पर प्रतिवर्ष घोसुन्डा में सनकादिकों की लीलाओं का विशाल पैमाने पर आयोजन किया जाता है। यह परम्परा पिछले 275 वर्षों से प्रचलित है। समय का लाभ लेते हुए हमने यहां से सीधा घोसुन्डा जाना उचित समझा। वहां यह लीला तीन दिन तक चलती है। प्रतिवर्ष मेड़ी का खेड़ा वाले भगत आकर वहाँ रासधारी रचाते हैं। हमने चतुर्दशी को सायंकाल कान्ह झूले का प्रदर्शन देखा। दो छोटे-छोटे बच्चों को कृष्ण-बलराम बनाकर 16 बड़े-बड़े मटकों पर बांस की टाटी बांधकर घोसुंडा के तालाब में छोड़ दी जाती है।

नाविक के रूप में इस टाटी को खेने वाले वहीं के भोई लोग होते हैं जो तैरते हुए उस टाटी को पानी में चलाते रहते हैं। यह टाटी आधे तालाब तक जाकर फिर मुख्य घाट की ओर मुड़ जाती है। घाट तक पहुंचने में करीब पौन घंटा लगता है।

वहां पर कृष्ण-बलराम को उतारकर फिर उनके सम्मुख कृष्ण सम्बन्धी विविध लीला-रचनाओं का सस्वर काव्य पाठ होता है। तदनन्तर लोग बड़ी श्रद्धा-भक्ति में जय-जयकार करते हुए तथा चने की दाल का प्रसाद बांटते हुए जुलूस के रूप में मंदिर पहुंचते हैं। त्रयोदशी को सनकादिकों की लीलाएँ तथा पूर्णिमा पर छिटपुट खेल तमाशे एवं भजन-भाव जुड़ाये जाते हैं।

डॉ. महेन्द्र भानावत से चर्चा करते गिरधारी जीणगर

यहां से रात्रि को लगभग 2 बजे हम निम्बाहेड़ा पहुंचे। गाड़ी से उतरते ही पता चला कि वहाँ पास ही हनुमानजी के मन्दिर में चित्तौड़ के चैनरामजी की भजन मण्डली जमी हुई है। हमारे लिए यह स्वर्ण अवसर था। अत: हम सीधे हनुमानजी के मन्दिर में पहुंचे जहां पूरी रात हमने चैनरामजी के साथ भजन-श्रवण तथा वार्ता-विमर्श में व्यतीत की। चैनरामजी के हाल ही में चैनराम चिंतामणि नाम से भजनों के दो भाग प्रकाशित हुए हैं। इस मंडली में अठाना के घासीराम शहनाई वादक, नीमच के रहमत नगाड़ा वादक, नानूराम नगारची प्रमुख गायक एवं नर्तक तथा रमेश मुख्य नृत्यकार था।

प्रात: होते ही कलंगी के प्रसिद्ध समर्थक श्री गिरधारी जीणगर से सम्पर्क साधा। फकीर मोहम्मद के सम्बन्ध में उनसे पूछताछ की तो पता चला कि निम्बाहेड़ा में ही उनका स्थाई निवास है। अत: हम उन्हें साथ लिए उनके निवास पर गये परन्तु उनसे भेंट नहीं हो सकी। वे करजू गये हुए थे और उसी दिन उनके वहां आने का था अत: उस दिन निम्बाहेड़ा में ही ठहरे। गिरधारीजी से हमने तुर्रा-कलंगी ख्यालों के सम्बन्ध में विविध जानकारी प्राप्त की। उहोंने भक्त पूरनमल, भगवती इतिहास भजन माला भाग 1 तथा शक्ति सुत तुर्रा यानी शादी की बर्बादी नामक ख्याल पुस्तकें लिखीं। घोसुन्डा के मिर्जा हसन बेग ने मिर्जा लावनी, ख्याल नौटंकी माच तथा कई लावणियां लिखीं।

दूसरे दिन प्रात: जब पता लगा कि फकीर मोहम्मद नहीं आये हैं तो हम सीधे बस द्वारा करजू चले गये। यह गांव बड़ीसादड़ी के पास है। वहाँ जाने के लिए सड़क पर उतर कर दो एक मील पैदल जाना पड़ता है। फकीर मोहम्मद ने अपनी भेंट में बताया कि लगभग 40 वर्ष पूर्व उन्होंने रासधारी का अपना दल प्रारम्भ किया था जो 20 वर्ष तक चला।

मुकुट धारण करने का अधिकार वैरागी साधुओं को ही होता था। रावण, हनुमान, मिरग, नरसिंह तथा गणेश चेहरे अर्थात् मुखौटे धारण करते थे। प्रारम्भ में गोडवाड़ के लोग खेल करते थे। वाद्यों में सारंगी चलती थी फिर तबले हारमोनियम ढोलक आदि न प्रवेश पाया। मेवाड़ में 70 वर्ष पूर्व सर्वप्रथम कपासन के पास हथियाना गाँव के गिरधारी वैरागी ने अपना दल प्रारंभ किया।

फकीर मोहम्मद ने पावा पिछावा (मारवाड़) के मूला दर्जी से रासधारी ख्याल सीखा। कुशाल भील का भी अच्छा दल था जिसने उदयपुर के महाराणा फतहसिंहजी के समक्ष भी अपना प्रदर्शन दिया था। गादोली के हीरालाल जाट, नाड़ा खेड़ा के गोकुल ब्राह्मण तथा कपासन के लछमण भाट की भी अच्छी मण्डली थी। शरद पूर्णिमा से खेल प्रारम्भ कर आषाढ़ महीने तक घूमते रहते थे। राम-लक्षमण भी घाघरा झग्गा धारण करते थे। चूड़ीदार पाजामे का प्रचलन बाद में चला। वर्तमान में गुडली के गंगाराम का अच्छा दल है। करजू के शंकरगिरि, मथुरागिरि, घीसूलाल, रामनिवास, भंवरलाल, शौकिया खिलाड़ी हैं जो मुख्यत: शरद पूर्णिमा पर हाथरसी ख्याल करते हैं।

7 अक्टूबर को 1968 हम करजू से सीधे रात को भीलवाड़ा पहुंचे। प्रात: होने पर हम वहां के प्रसिद्ध पड़ चित्रकार श्रीलालजी तथा कल्याणजी जोशी से मिले। उन्होंने जानकारी दी कि परबतसर के पास कणेरिया में चैनराम, बक्षीराम, रामचन्द्र गूजर तथा फागी (जयपुर) के लक्ष्मीनारायण कुम्हार बगड़ावतों के माने हए भोपे हैं। रामदला की पड़ बांचने वाला पापड़ी का गिरधारी विलक्षण कलाकार है।

रामदला की पड़ की तरह पापड़ी का पटिया भी होता है जो रामदला से एक हाथ बड़ा होता है। रामदेवजी की पड़ 50 वर्ष पूर्व रामदयालजी ने बनवाई। इसे पाबूजी के भोप बांचते हैं। माताजी की पड़ लाल अथा काला दो रंगों में बनाई जाती है। वागरी लोग नवरात्रा में इसके सम्मुख नाचाकूदी करते हैं। बावरी की माताजी की पड़ पक्की होती है जब कि वागरी की काली। दोनों पक्षों में समान चित्र होते हैं।

बावरी की पड़ के केन्द्र में नारसिंघी होती है जबकि वागरी की पड़ में भैंसासुर महिषमर्दिनी। इन पड़ों में सात माताएँ अपने-अपने वाहन हाथी, ऊंट, मुर्गा, घोड़ा, हंस, उल्लू तथा शेर पर चित्रित की होती हैं। इसके अतिरिक्त कालागोरा भेरू तथा सिंघवड़ भी दिखाये जाते हैं। भीलवाड़ा, हमीरगढ़ तथा खायड़ा के मन्दिरों में देवनारायण की विविध लीलाओं के पुराने भित्ति चित्र उपलब्ध हैं।

- क्रमश :

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।